Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 280 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, शनिवार 04 मई 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

भयभीत मनुष्य सत्य के मार्ग का अनुसरण करने में समर्थ नहीं है।

Frighten man can't follow the path of truth.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

बिलासपुर चुनावी जनसभा में गरजे मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, कहा-

5 सालों में देश को विश्व की सबसे बड़ी ताकत बनाना है, आपका वोट पीएम नरेंद्र मोदी के लिए अमूल्य है

बिलासपुर(विश्व परिवार)। तीसरे चरण के मतदान अब कुछ ही दिन शेष बचे हैं, ऐसे में अब सभी राजनीतिक पार्टियों के दिग्गज नेता ताबड़तोड़ दौरा कर अपने प्रत्याशी के पक्ष में वोट मांग रहे हैं, इसी कड़ी में शुक्रवार को प्रदेश के मुखिया विष्णु देव साय और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष किरण देव सिंह बिलासपुर लोकसभा के परसदा और कोटा में आम सभा को संबोधित करने पहुंचे।

सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार करते हुए कहा कि तीन महीने में ही जिस तरह से छत्तीसगढ़ में विकास की गंगा बहाने की कोशिश हुई है। उसमें जनता का भरोसा विष्णु के सुशासन पर दिखा है वहीं भरोसा इस चुनाव में भी दिखाना है जिससे दिल्ली में भी भाजपा की सरकार वापस आए और विकास की रफ्तार को गति मिल सके। वही मुख्यमंत्री ने जनता को संबोधित करते हुए कहा कि आने वाले 5 सालों में देश को विश्व की सबसे बड़ी ताकत बनाना है, इसके लिए आपका यह वोट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए अमूल्य है। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जन कल्याणकारी योजनाएं के संबंध में कहा की यह योजनाएं हितग्राहियों को लाभ दे रही है तो वही विकसित भारत की एक परिकल्पना भी यहां दिख रही है, ऐसे में आने वाले सात मई को मतदान कर भाजपा के सांसद को मत दे। ताकि दिल्ली में आपका सांसद आपके क्षेत्र को विकास की बयार से बढ़ा सके।

कांग्रेस पार्टी और पूर्व मुख्यमंत्री दोनों ही भ्रष्टाचारी हैं : विष्णुदेव साय

सूरजपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज सूरजपुर दौरे पर है, जहां प्रेमनगर के हाई स्कूल ग्राउंड में आयोजित विजय संकल्प आमसभा में शिरकत किए. वही जनसभा को संबोधित करते हुए सरगुजा लोकसभा के बीजेपी प्रत्याशी चिंतामणी महाराज के पक्ष में वोट डालने की अपील की।

वही जनसभा को संबोधित करते हुए सीएम विष्णुदेव साय ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधते हुए कांग्रेस को लबरा पार्टी कहा, उन्होंने आमसभा को संबोधित करते हुए कहा कि यह चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस बार फिर से नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है, कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर निशाना चाहते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी और पूर्व मुख्यमंत्री दोनों ही भ्रष्टाचारी है, यही वजह है कि भूपेश बघेल पर महादेव सट्टा ऐप मामले में एफआईआर दर्ज हो चुका है। उन्होंने कहा कांग्रेस पार्टी लगातार झूठा प्रचार कर रही है, जिस प्रकार सरगुजावासियों ने विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का सुपड़ा साफ कर दिया, इसी प्रकार पूरे प्रदेश में इस बार कांग्रेस का सुपड़ा साफ करना है और भाजपा को पूरे 11 लोकसभा सीटों पर जीत दिलानी है।

समाज प्रमुखों से मिले मुख्यमंत्री साय, मांगा समर्थन, सरोज पांडेय को दी शेरनी की संज्ञा

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय तूफानी चुनावी दौर कर रहे हैं. इस कड़ी में आज कोरबा में 50 से ज्यादा समाज के प्रमुखों के साथ लंबी चर्चा की. सीएम साय ने सभी समाज के प्रमुखजनों से कहा कि कोरबा की जनता सौभाग्यशाली है, जो सरोज पांडेय जैसी योग्य प्रत्याशी मिली है. उन्होंने सरोज पांडेय को शेरनी की संज्ञा दी। सीएम साय ने समाज प्रमुखों से पीएम मोदी के दस साल के कामकाज की चर्चा करते हुए उन्हें फिर से प्रधानमंत्री बनाने को देश की जरूरत बताया. उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने हर समाज की तरक्की की सदैव चिंता की है. अपनी सरकार पर उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की सरकार ने न्यूनतम समय में जनहित के फैसले लिए हैं, त्वरित निर्णय की ये गति सतत जारी रहेगी। सीएम साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में 4 सीटों पर मतदान हो चुका है, शेष सीटों पर 7 को मतदान होना है।

राहुल गांधी ने रायबरेली लोकसभा सीट से दाखिल किया अपना नामांकन, सड़कों पर उमड़ा जनसैलाब

नामांकन के दौरान माँ सोनिया गांधी बहन प्रियंका व राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे रहे मौजूद

रायबरेली (आरएनएस)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रायबरेली लोकसभा सीट से अपना नामांकन दाखिल किया। इस दौरान कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा, कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी और रॉबर्ट वाड्रा भी मौजूद रहे।राहुल गांधी ने दोपहर करीब सवा दो बजे कलेक्ट्रेट में अपना नामांकन भरा।

शुक्रवार सुबह राहुल गांधी विशेष विमान से दिल्ली से फुरसतगंज पहुंचे। वहां से अमेठी होते हुए रायबरेली आए।हाथी पार्क स्थित केंद्रीय कांग्रेस कार्यालय में पूजा करने के बाद राहुल का नामांकन जुलूस निकला। जो हाथी पार्क,डिग्री कॉलेज चौराहा से होते हुए जुलूस कलेक्ट्रेट पहुंचा। इस जुलूस में भारी भीड़ देखने को मिली। कार्यकर्ताओं का उत्साह अपने चरम पर था। कांग्रेसी राहुल को रिकॉर्ड मतों से विजयी बनाने की बात कहते रहे। इस जुलूस में कांग्रेस के साथ सपा कार्यकर्ता भी रिहा। बता दें कि रायबरेली सीट को कांग्रेस का गढ़ कहा जाता है और इस सीट पर नामांकन की आखिरी तारीख के दिन कांग्रेस नेता राहुल गांधी का नाम कांग्रेस ने उम्मीदवार के रूप में घोषित किया। वहीं अंतिम दिन राहुल गांधी ने रायबरेली पहुंचकर नामांकन दाखिल कराया और नामांकन के बाद कांग्रेस चुनाव कार्यालय में उन्होंने पूजा अर्चना की। रायबरेली सीट पर पांचवे चरण में 20 मई को मतदान होगा और इस सीट पर बीजेपी ने दिनेश प्रताप सिंह को उम्मीदवार बनाया है।साल 2019 के चुनाव में रायबरेली सीट ही एक ऐसी सीट थी जिस पर कांग्रेस को जीत मिली थी। इस सीट पर सोनिया गांधी ने जीत दर्ज की थी। वहीं अब सोनिया गांधी के राज्यसभा जाने के बाद यह सीट खाली हुई और अब इस सीट पर राहुल गांधी ने नामांकन किया है। यूपी में सपा-कांग्रेस गठबंधन के साथ चुनाव लड़ रही है

राहुल के सामने होंगे भाजपा प्रत्याशी दिनेश प्रताप : वीवीआईपी सीट रायबरेली पर भाजपा प्रत्याशी दिनेश प्रताप सिंह लगातार दूसरी बार गांधी परिवार के सामने होंगे। राहुल गांधी के नामांकन के कुछ देर पहले ही दिनेश प्रताप सिंह ने अपना नामांकन दाखिल किया। 2019 में दिनेश प्रताप सिंह सोनिया गांधी के सामने चुनाव लड़े थे।

बंगाल की रैली में बोले पीएम मोदी- राहुल को अमेठी से भागकर रायबरेली सीट चुननी पड़ी

प्रधानमंत्री मोदी ने पश्चिम बंगाल के बर्धमान-दुर्गापुर में जनसभा को संबोधित किया

दुर्गापुर (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी वायनाड के अलावा रायबरेली से भी चुनाव लड़ने वाले हैं। अटकलें लगाई जा रही थी कि वो अमेठी से चुनाव लड़ सकते हैं, लेकिन कांग्रेस ने अमेठी से किशोरी लाल (केएल) शर्मा को टिकट दिया है। राहुल गांधी के अमेठी से चुनाव न लड़ने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस पर तंज कसा है।

पीएम मोदी का राहुल गांधी पर तंज-डरो मत, भागो मत : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के बर्धमान-दुर्गापुर में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि राहुल रायबरेली से रास्ता खोज रहे हैं इसलिए राहुल भागकर रायबरेली पहुंच गए। पीएम मोदी ने आगे कहा,राहुल गांधी अमेठी से चुनाव लड़ने से डर रहे हैं। उनके चेले कह रहे हैं कि अमेठी आएंगे। राहुल गांधी से कहता हूं कि डरो मत, भागो मत।

मैं 140 करोड़ देशवासियों की सेवा करता हूं : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा,मैं मौज-मस्ती करने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं, मैं खुद के लिए जीना नहीं चाहता हूं। मैं तो आपकी सेवा का संकल्प लेकर, महान भारत माता के 140 करोड़ देशवासियों की सेवा करने के लिए निकलता हूं।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने किया विभाजनकारी नीतियों पर करारा प्रहार

सागर (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने गुरुवार को मध्यप्रदेश के सागर लोकसभा क्षेत्र के सिरोंज में जनसभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस के भ्रष्टाचार और विभाजनकारी नीतियों पर करारा प्रहार किया। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, मध्यप्रदेश भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा और सागर प्रत्याशी लता वानखेड़े ने भी जनसभा को संबोधित किया।

जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि यह चुनाव विकसित भारत के संकल्प लेने का चुनाव है। 20 वर्ष पहले मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य के रूप में जाना जाता था। बीमारू का अर्थ 'ब' से बिहार, 'म' से मध्यप्रदेश और 'र' से राजस्थान हुआ करता था। लेकिन जबसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार मध्यप्रदेश में बनी है, तबसे मध्यप्रदेश सर्वांगीण विकास की ओर बढ़ गया और अग्रणी राज्य के रूप में खड़ा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। 10 वर्ष पूर्व भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था था, मगर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कुशल नीतियों के कारण आज विश्व की 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। भाजपा सरकार के तीसरे कार्यकाल में भारत का अर्थव्यवस्था विश्व का तीसरा सबसे बड़ा अर्थतंत्र बन जाएगा। जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि आज भारत ऑटो मोबाइल मेन्यूफैक्चरिंग में तीसरे और दवाई बनाने के क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है। भारत दुनिया को सबसे सस्ती और असरदार दवा निर्यात कर रहा है, भारत का दवा निर्यात 138ब तक बढ़ा है और भारत दुनिया की डिस्पेंसरी बन गया है। 10 साल पहले देश के लगभग सभी मोबाइल फोन चीन और जापान में निर्मित किए जाते थे। मगर आज लगभग 97ब मोबाइल का विनिर्माण भारत में ही किया जा रहा है।

लोकसभा चुनाव में दूर-दूर तक मुकाबले में नहीं हैं कांग्रेसी : संजय श्रीवास्तव

महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण की घोषणा फर्जी, हार सामने देखकर कुछ भी वादा कर रही कांग्रेस

रायपुर (विश्व परिवार)। भाजपा महामंत्री संजय श्रीवास्तव ने कहा है कि इस लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी और उनके सहयोगी दल दूर-दूर तक मुकाबले में नहीं हैं। आईसीसी के प्रशासन प्रभारी एवं कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य गुरदीप सप्पल कुछ भी दावा कर लें लेकिन 4 जून को जनता अपना फैसला उन्हें सुना देगी। और एक बार फिर देश की बागडोर भाजपा के हाथों में होगी।

भाजपा प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव ने कहा इस चुनाव में कांग्रेसी बुरी तरह से डर रहे हैं। उन्हें सबसे बड़ी आशंका इस बात की है कि इस बार उनका प्रदर्शन 2019 के लोकसभा चुनाव से भी अधिक बुरा न हो जाए। 2019 में कांग्रेस केवल 52 सीटों पर सिमट कर रह गई थी। जबकि उनका गठबंधन 100 का आंकड़ा पार नहीं कर पाया था। वह 92 में आकर अटक गया था। इस बार तो देश में मोदी लहर है। भाजपा ने अपने सभी वादे पूरे कर लिए हैं। साढे पांच सौ साल बाद राम लला अयोध्या में लौट आए। वहीं कश्मीर में धारा 370 हटाने का साहस केवल भाजपा ही दिखा सकती थी। अल्प संख्यकों की राजनीति करने वाली पार्टी कांग्रेस तो इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। लोकसभा में महिला आरक्षण बिल भी केवल मोदी सरकार लेकर आई। मोदी जी की एक आवाज में पूरा देश राम जन्मोत्सव पर दीवाली से बड़ा उत्सव मनाता है। यही वजह है कि कांग्रेस और उनका गठबंधन पूरी तरह से हिले हुए है।

हार के डर से बड़ा प्रलोभन

भाजपा प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव ने आरोप लगाया कि आसन्न चुनाव में कांग्रेस के नेता हार के डर से अपने मेनीफेस्टो में ऐसेऐसे वादे कर दिए हैं जिनको व्यवहारिक तौर पर लागू कर पाना संभव नहीं है। सत्ता से चिपके रहने के आदी कांगेसियों ने केन्द्र में सरकार आने पर महालक्ष्मी योजना के तहत महिलाओं को एक-एक लाख रू देंने, सरकारी नौकरी में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देने का वादा कर रहे हैं। काग्रेसियों को पता है कि उनकी सरकार नही बनने वाली इसलिए देशकी जनता को बरगलाने का प्रयास कर रहे हैं।

एआईसीसी के प्रशासन प्रभारी एवं वर्किंग कमेटी के सदस्य गुरदीप सप्पल ने प्रेसवार्ता को किया संबोधित

कहा- मोदी सरकार हिली हुई है और अब 400 पार बोलने की हिम्मत नहीं हो रही

रायपुर (विश्व परिवार)। एआईसीसी के प्रशासन प्रभारी एवं कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य गुरदीप सप्पल ने पत्रकारवार्ता को संबोधित करते हुये कहा कि छत्तीसगढ़ में पिछले वर्ष बहुत ही सफल अधिवेशन हुआ। रायपुर से जो यात्रा शुरू होने वाली है वो अपने मुकाम में पहुंचने वाली है। मोदी डर रहे हैं कांग्रेस को उल्टा सलाह दे रहे थे कि डरो मत। मोदी सरकार हिली हुई है और जाने के कगार पर है। अब 400 पार बोलने की हिम्मत नहीं हो रही है। मोदी और भाजपा के लोग नहीं बोल पा रहे है। मोदी जी जवाब दे कश्मीर में भारतीय जनता पार्टी को किसने निपटा दिया। कश्मीर में भारतीय जनता पार्टी चुनाव से क्यों भाग रही है? कश्मीर के अंदर तीन सीट है। भाजपा कश्मीर के अंदर एक भी प्रत्याशी नहीं उतार पाये। कश्मीर को वह सबसे बड़ी उपल्बधि मानते थे। कश्मीर से राहुल गांधी जी भारत जोड़ो यात्रा की शुरूआत हुयी थी। कश्मीर में राहुल गांधी ने देश के लोगो को कहा डरो मत। कश्मीर में राहुल गांधी हजारो कार्यकर्ता के साथ पहुंचकर वह लाल चौक पर झंडा फैराया। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। मोदी कांग्रेस के घोषणा न्याय पत्र को लेकर झूठ फैला रहे है। मोदी झूठ इसलिये बोल रहे है क्योंकि वह कांग्रेस के घोषणा न्याय पत्र के सच से डरे हुये है। देश में सबसे बड़ा सच यह है कि महंगाई जिसका मुकाबला मोदी नहीं कर पा रहे। पिछले 10 सालों में महंगाई बेतहाशा बढ़ी। रिर्जव बैंक इंडिया का डेटा यह बताता है कि पिछले एक साल के अंदर भारत में आम जनता की देनदारी है वह 75 प्रतिशत बढ़ी है यह वो जनता है जो महंगाई से त्रस्त है। लोगो को महंगाई चुभ रही है पढ़ाई के लिये, दवाई के लिये लोग अपने बचत का ईस्तमाल कर रहे है। मोदी जी मंगलसूत्र की बात बार-बार करते है और वह भी डेटा रिर्जव बैंक आफ इंडिया का है कि पिछले पांच साल में देश के अंदर गोल्ड लोन पांच गुना बढ़ गया है। केन्द्र में कांग्रेस इंडिया एलाईंस की सरकार आने पर सबसे पहले महालक्ष्मी योजना के तहत महिलाओं को एक-एक लाख रू. सालाना देंगे और सरकारी नौकरी में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा। 4 दशक में बेरोजगारी इस देश में सबसे ज्यादा बढ़ गयी है। मोदी सरकार जो नीति की बात करते है वह नीति कभी नहीं बनी, जैसे न स्मार्ट सिटी बनी, न मेक इन इंडिया बनी, न गंगा साफ कर पाये, न किसानो की आय दुगुनी की। देश के अंदर जो भी काम हो रहे थे वह मोदी के गलत पॉलिसी से रूक गया। भारत के अंदर मैनुफ्कचरिंग का हिस्सा जो जीडीपी के अंदर था 17 प्रतिशत था। मोदी सरकार ने दावा किया था मेक इन इंडिया मैन्युफैक्चरिंग का जो योगदान 50 प्रतिशत बढ़ जायेंगे। आज 10 साल के बाद 20 से 25 प्रतिशत गिर गया। यह मोदी सरकार डेटा है। मैन्युफैक्चरिंग मोदी सरकार के दौरान एक चौथाई के करीब गिर चुकी है।

रायपुर लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल ने अभनपुर, नवापारा, पारागांव, चंपारण, आरंग और मंदिर हसौद में रोड शो कर जनता से भाजपा के लिए मांगे वोट

रायपुर (विश्व परिवार)। जैसे-जैसे तीसरे चरण के मतदान की तारीख नजदीक आ रही है। वैसे-वैसे चुनावी सरगर्मी भी बढ़ती जा रही है। इसी क्रम में रायपुर लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल ने शुक्रवार को अभनपुर, नवापारा, पारागांव, चंपारण, आरंग, मंदिर हसौद में रोड शो कर जनता से भाजपा के लिए वोट मांगे। अभनपुर में ओव्हर ब्रिज, धमतरी रोड से एन्ट्री मंडी गेट से बस स्टैण्ड होकर नवापारा राजिम रोड तक रोड शो किया। इसके बाद नवापारा में कर्मा मंदिर, बस स्टैण्ड, सदर बाजार, नेहरू घाट, गंज रोड होते हुए वापस बस स्टैण्ड पहुंची जहां शो का समापन हुआ।

वहीं आरंग में सतनाम भवन, भक्त माता कर्मा चौक, हरदेव लाल बाबा चौक, बस स्टैण्ड, नेताजी चौक, शिवाजी चौक, श्याम बाजार, आजाद चौक, मछली चौक, लोधीपारा पहुंचे जहां रोड शो का समापन हुआ। जबकि मंदिर हसौद में बस स्टैण्ड मेन रोड, बस्ती पारा से रावाभाटा में रोड शो कर जनता से वोट मांगे। रोड शो के दौरान बृजमोहन अग्रवाल का जगह-जगह भव्य तरीके से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर बृजमोहन अग्रवाल ने कई जगह लोगों को संबोधित भी किया एवं माना में भी एक जनसभा का आयोजन किया गया। आज के प्रचार के दौरान विधायक इंद्र कुमार साहू गुरु खुशवंत साहेब सुमित हजारों की संख्या में पार्टी नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

आज नयापारा नगर में बृजमोहन अग्रवाल की चुनावी रैली में सकल जैन समाज के द्वारा भव्य स्वागत किया गया स्वागत में सकल जैन समाज के अध्यक्ष शिखर बाफना सकल जैन समाज के कार्यकारी अध्यक्ष किशोर सिंघई उपाध्यक्ष सुरित जैन संरक्षक रमेश पहाड़िया अशोक गंगवाल सचिव अखिलेश नाहर सहित समाज के अनेक लोगों ने श्री अग्रवाल का स्वागत सम्मान किया।

सकल जैन समाज के अध्यक्ष शिखर बाफनाने बृजमोहन अग्रवाल से मांग की की महावीर जयंती के दिन शराब का विक्रय प्रदेश में बंद रहना चाहिए अभी यह बंद नहीं है इस पर अविलंब की कार्रवाही करनी चाहिए बृजमोहन अग्रवाल जी ने आश्वासन दिया की प्रयास करेंगे।

दैनिक
विश्व परिवार

रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार

रायपुर, शनिवार 04 मई 2024

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

30 जून तक दोपहर 12 से 3 बजे के बीच में पशुओं के वजन ढोहने पर प्रतिबंध

कलेक्टर ने जारी किया आदेश

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। छ.ग. राज्य जीव जंतु कल्याण बोर्ड के तहत्त भीषण गर्मी की स्थिति में प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से 3ः00 बजे के बीच तापमान 37.C (डिग्री सेल्सियस) से अधिक निरंतर बना रहता है। इस दौरान पशुओं पर सामाग्री रखकर या सवारी हेतु उपयोग करने से अथवा पशुओं को टांगे/ बैलगाड़ी/ भैसागाड़ी/ ऊटगाडी/खच्चर/ टट्टू गाडी एवं गधे पर वजन ढोने के उपयोग करने से पशु बीमार हो सकते है अथवा उनकी मृत्यु हो सकती है। पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण परिवहन एवं कृषि पशुओं पर क्रूरता निवारण नियम 1965 के नियम 6 (3) के अनुसार जिन क्षेत्रों में तापमान 37.ष्ट से अधिक रहता है, उन क्षेत्रों में दिनांक 1 मई से 30 जून 2024 तक दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच ऐसे पशुओं का उपयोग प्रतिबंधित किया गया है। इस हेतु कलेक्टर के एल चौहान ने आदेश जारी किया है।

पत्रकारों ने किया पहली बार डाक मतपत्र से मतदान, निर्वाचन आयोग की पहल को सराहा

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य के लिए 10 सेवाओं को अनिवार्य सेवा के रूप में अधिसूचित किया गया है। इन 10 सेवाओं में प्राधिकार पत्र प्राप्त मीडियाकर्मी सहित स्वास्थ्य विभाग, विद्युत विभाग, रेल परिवहन, डाक एवं टेलीग्राम विभाग, बीएसएनएल, आल इण्डिया रेडियो, दूरदर्शन, छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी दुग्ध संघ मर्यादित एवं भारतीय खाद्य निगम शामिल है।इस अनिवार्य सेवा का लाभ उठाते हुए पहली बार जिले के आठ पत्रकारों ने अपने मताधिकार का उपयोग डाक मतपत्र के माध्यम से किया है।बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के वरिष्ठ पत्रकार एम एस पाध्ये, दलजीत चांवला, देवेश साहू, भानूप्रताप साहू, चतुरमूर्ति वर्मा, हेमंत बघेल, योगेश यादव एवं लकेश्वर बघेल ने आज डाक मतपत्र अंतर्गत अनिवार्य सेवा के लिए स्थापित संयुक्त जिला कार्यालय में बनाए गए सुविधा केन्द्र में मतदान किया मतदान के पश्चात इस नवाचार के संबंध में जिले के वरिष्ठ पत्रकार, सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं संवाद साधना जिला प्रतिनिधि एम एस पाध्ये ने पोस्टल बैलेट के जरिए मतदान करते हुए कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा शासकीय अधिकारियों व कर्मचारियों को लंबे समय से पोस्टल बैलट द्वारा मतदान की सुविधा दी जा रही है। पहली बार पत्रकारों को यह सुविधा उपलब्ध करा रही है यह काबिले तारिफ है। इस सुविधा से यह भी लाभ होगा कि मीडिया प्रतिनिधि अब निश्चिंत होकर पोलिंग बूथ से मतदान का अच्छा कवरेज कर सकेंगें। इसी तरह महाकौशल ब्यूरो प्रमुख दलजीत चांवला ने आयोग के पहल की सराहना करते हुए कहा कि लोकतंत्र के महापर्व के दिन मतदान केंद्रों में कवरेज के लिए सुबह से शाम तक पत्रकार भाग-दौड़ में जुटे रहते हैं। खुद का वोट डालने के लिए उन्हें बहुत कम समय मिलता है, इसे ध्यान में रखते हुए भारत निर्वाचन आयोग ने पहली दफा आयोग से अधिकृत पत्रकारों को अनिवार्य सेवा में शामिल करते हुए उन्हें पोस्टल बैलेट से मतदान की सुविधा प्रदान की है। आज मैंने इस सुविधा का उपयोग कर नई सरकार बनाने में अपना योगदान दिया। बसंल न्यूज के ब्यूरो प्रमुख भानूप्रताप साहू ने मतदान के पश्चात कहा कि छत्तीसगढ़ लोकसभा चुनाव 2024 में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा फ्रंट लाइन वर्कर के अलावा मीडिया में कार्यरत पत्रकारों को भी बैलट पेपर से मतदान करने की जो सुविधा मुहैया कराया गया है वह काबिले तारीफ है। क्योंकि एक पत्रकार आम जनता, कार्यपालिका और विधायिका के बीच सेतु का काम करते हैं, और इस बीच कई दफा वे अपने अधिकारों से वंचित रह जाते हैं।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार, रायपुर (छ.ग.), फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनांतर्गत **बोरियाकला** रायपुर में स्थित **भवन क्रमांक सेडार-I/06, (1) श्री अमित कुमार मानकानी पिता श्री कल्याण दास मानकानी (2) श्रीमती आशा मानकानी पति श्री कल्याण दास मानकानी,** के नाम पर नामांतरित है। नामांतरी द्वारा उक्त भवन का इस कार्यालय के पत्र क्रमांक **4101** दिनांक **18.01.2021** को नामांतरण आदेश जारी किया गया है। नामांतरी **(1) श्री अमित कुमार मानकानी पिता श्री कल्याण दास मानकानी (2) श्रीमती आशा मानकानी पति श्री कल्याण दास मानकानी,** द्वारा उक्त भवन को क्रेता **श्री बैभव सिंह परमार पिता श्री उत्तम सिंह परमार,** निवासी- श्री रावतपुरा सरकार, धनेली माना रायपुर, पक्ष में दिनांक **12.08.2022** को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में नवीन क्रेता **श्री बैभव सिंह परमार पिता श्री उत्तम सिंह परमार** द्वारा उक्त भवन को **फ्री-होल्ड** पश्चात् अपने नाम पर मण्डल अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन का **फ्री-होल्ड** उपरांत मण्डल अभिलेख में नाम दर्ज करने के संबंध में किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि दीनदयाल आवास योजनांतर्गत **सड्डू,** रायपुर में स्थित **एल.आई.जी. भवन क्रमांक-660, श्री कुलदीप वर्मा पिता श्री कल्याण वर्मा** के नाम से नामांतरित है। नामांतरी द्वारा उक्त भवन की **विक्रय विलेख** दिनांक **13/11/2019** पंजीकृत कराने के उपरांत भवन की पूर्ण राशि जमा कर नामांतरण आदेश प्राप्त कर लिया है। वर्तमान में नामांतरी **श्री कुलदीप वर्मा पिता श्री कल्याण वर्मा** निवासी- वार्ड नंबर-05, नेवधा, केसदा, तहसील व जिला बलौदाबाजार (छ.ग.) के द्वारा उक्त भवन को **क्रेता श्रीमती मोनिका वर्मा पति श्री गोपाल सिंह वर्मा** निवासी- वार्ड नंबर-05, नेवधा, केसदा, तहसील व जिला बलौदाबाजार (छ.ग.) को **विक्रय** करने के लिए इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत कर अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) की मांग की गई है।

अत: उक्त भवन के **विक्रय विलेख** के संबंध में किसी व्यक्तिए शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता 8 रें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11240/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11240
वार्ड का नाम- 35 - पं. रविशंकर शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **35** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR224A0185A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SAPNA DEWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ARJUN DAS DEWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **राखी सिंह** पिता/पति, श्री/श्रीमती **नवीन सिंह** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11239/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11239
वार्ड का नाम- 57 - पं. भगवतीचरण शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **57** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR447E00040** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JAYSHREE GOLECHHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SUPARAS CHAND GOLECHHA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **कमला देवी गोलछा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. पारस चंद गोलछा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रशीद, मृत्यु प्रमाण पत्र, सहमति पत्र, परिचय पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /11252/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11252
वार्ड का नाम- 1 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **1** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801N00101** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SATNAM SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **AVTAR SINGH SAINI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BHUVNESHWARI GOSWANI D/O INDU DEVI GOSWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **........** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /11270/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11270
वार्ड का नाम- 1 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **1** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801P00072** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **M.V. RAMANMURTI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **M. KANTA RAO** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. M. REKHA W/O LT. M.V. RAMAN MURTY 2. M. SHRAVYA D/O LT. M.V. RAMAN MURTY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **........** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र एवं नामांतरण आदेश**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 71 दिनांक 03.05.2024
वार्ड का नाम- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड
वार्ड क्र. 2 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **2** मांग **पंजी क्र. 167 युआईडी 10969** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **पामिला किसले / स्व. बलिराम कोसले** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **उर्मिला / किशोरी साहू** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **03-06-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 70 दिनांक 03.05.2024
वार्ड का नाम- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड
वार्ड क्र. 2 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **2** मांग **पंजी क्र. 167 युआईडी 10969** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **बलिराम कोसले / बउवा कोसले** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **पामिला किसले / स्व. बलिराम कोसले** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **03-06-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11250/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11250
वार्ड का नाम- 46 - मौलाना अब्दूल रऊफ वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **46** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR440I00269** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PANKAJ JADWANI, ASHISH MAKHIJANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. K.L. JADWANI, G.B. MAKHIJANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **पंकज जादवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. के.एल. जादवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11248/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11248
वार्ड का नाम- 46 - मौलाना अब्दूल रऊफ वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **46** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR440I00201** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DEVASHISH DEVID AND DEEPAK DEVID** पिता/पति, श्री/श्रीमती **M.K. DEVID** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **पंकज जादवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. के.एल. जादवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11247/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11247
वार्ड का नाम- 35 - पं. रविशंकर शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **35** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR224G0293A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **AKSHA KHAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **HAMID KHAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **शेख सद्दाम** पिता/पति, श्री/श्रीमती **शेख रबीउल्ला** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रशीद, मलमा बिक्रीनामा, परिचय पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11245/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11245
वार्ड का नाम- 35 - पं. रविशंकर शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **35** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR224D00009** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SARFUNISHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **AMIR KHAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **गुलाम रसूल खान** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. अमीर खान** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रशीद, मृत्यु प्रमाण पत्र, सहमति पत्र, परिचय पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11244/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11244
वार्ड का नाम- 35 - पं. रविशंकर शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **35** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR224D00199** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **GAYATRI SHUKLA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. JAI PRAKASH SHUKLA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **करुना बंसोडे** पिता/पति, श्री/श्रीमती **राकेश बंसोडे** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11243/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11243
वार्ड का नाम- 35 - पं. रविशंकर शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **35** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR224C0134R** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SANJAY KUMAR SINGHANIA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. NARSINGH PRASAD SINGHANIA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **स्वाती अग्रवाल** पिता/पति, श्री/श्रीमती **महावीर प्रसाद अग्रवाल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11242/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11242
वार्ड का नाम- 35 - पं. रविशंकर शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **35** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR224B0084A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SARVJEET SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. JEGENDRA SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **सुरेन्दर सिंग** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. जोगेंदर सिंग** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./11241/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11241
वार्ड का नाम- 35 - पं. रविशंकर शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **35** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR224A00185** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ARJUN DAS DEWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **CHANDUMAL DEWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **नवीन सिंह** पिता/पति, श्री/श्रीमती **विनय बहादुर सिंह** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10363/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10363
वार्ड का नाम-11- कालीमाता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-11 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR330B00123** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SULAKSHANI BAI** पिता/पति श्री/श्रीमती **LATE VASURAM DAULATANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. B. NIHARIKA 2. B.K. RAMARAO** पिता/पति श्री/श्रीमती **1. B. K. RAMARAO 2. B.J. RAO** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10707/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10707
वार्ड का नाम-11- कालीमाता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 11 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR330C00403** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MRS. EKTA AGARWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **ASHOK AGARWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SEEMA AGARWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **OM PRAKASH AGARWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10862/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10862
वार्ड का नाम-11- कालीमाता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-11 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR330G00097** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAGHUNATH SINGH KRISHNA** पिता/पति श्री/श्रीमती **LATE. MANOJ** केनाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **DEVASHISH BHATTACHARYA** पिता/पति श्री/श्रीमती **MANOJ KUMAR BHATTACHARYA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10863/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10863
वार्ड का नाम-11- कालीमाता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-11 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR330D0518A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAMBISHAL SAHU AND OTHERS** पिता/पति श्री/श्रीमती **LATE BHAGAT RAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **HARISH KUMAR SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **RAMBILASH SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **बटवारानामा**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10695/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10695
वार्ड का नाम-29- गुरु गोविंद सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-29 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR334E00570** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. SALILA DAS S/O G.C. DAS, ARUN DAS S/O G.C. DAS** पिता/पति श्री/श्रीमती **.......** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ARUN KUMAR DAS** पिता/पति श्री/श्रीमती **G.C. DAS** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, सहमति पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10155/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10155
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **30** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331F00041** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VEDMATI SINGH** पिता/पति श्री/श्रीमती **SUDHIR SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUDHIR SINGH** पिता/पति श्री/श्रीमती **LATE M.N. SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./11220/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11220
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **16** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107L489AD** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VASUDEV PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KHIMJI BHAI PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **सृष्टि जायसवाल** पिता/पति, श्री/श्रीमती **अभिलाष जायसवाल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /11211/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 03-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11211
वार्ड का नाम- 70 - संत रविदास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **70** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR813C00638** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **POONAM TANWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VIJAY KUMAR TANWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **DIPTIMAYEE BISWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SAMEER KUMAR PRADHAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शनिवार 04 मई 2024

मेडिकल कालेज का नाम प्यारेलाल के नाम पर न रखकर कांग्रेस ने कंवर समाज का किया अपमान - सरोज

प्रत्येक ग्राम पंचायत को 25-25 लाख देने की बातपर अडिग

मुझे बाहरी कहने वाले अपने नेताओं से क्यों नहीं करते सवाल

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा में मेडिकल कालेज की स्थापना की गई। कालेज का नाम अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व उप मुख्यमंत्री प्यारेलाल कंवर के नाम पर न रखकर कांग्रेस ने कंवर समाज का अपमान किया है। स्व. कंवर ने जिले में मेडिकल कालेज का सपना देखा था। कांग्रेस में परिवारवाद ही रहा है। ऊपर गांधी तो नीचे महंत परिवार है। क्या कांग्रेस में और कोई नेता नहीं है। लोकसभा क्षेत्र के प्रत्येक ग्राम को 25-25 लाख रुपए देने की बात पर अडिग हूं। इस राशि से ग्राम पंचायतों का विकास कराएंगे। उक्त बातें टीपी नगर में आयोजित पत्रकारवार्ता के दौरान भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व कोरबा लोकसभा प्रत्याशी सुश्री सरोज पांडेय ने कही। सु श्री पांडेय ने उन्हें बाहरी कहे जाने के सवाल पर कहा कि कांग्रेस के प्रत्याशी के द्वारा लगातार बाहरी का मुद्दा उठाया जा रहा है, मैं उनसे पूछना चाहती हूं कि वह स्वयं क्या इस लोकसभा क्षेत्र में वोट डालते हैं, मैं उनसे पूछना चाहती हूं क्या उनके राष्ट्रीय नेता जहां पर वह वोट डालते हैं वह वहां से चुनाव लड़ते हैं। राहुल गांधी कभी अमेठी से चुनाव लड़ते हैं और कभी वायनाड से चुनाव लड़ते हैं। स्वयं छत्तीसगढ़ की बात करें तो कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल स्वयं राजनांदगांव से चुनाव लड़ रहे हैं और पूर्व गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू महासमुंद से चुनाव लड़ रहे हैं। देवेंद्र यादव जो भिलाई के विधायक हैं वह बिलासपुर से लड़ रहे हैं क्या उनसे यह सवाल कर सकती है सीधे तौर पर कहूं आने वाले समय में उनकी हार की झुंझलाहट उनके चेहरे और उनके बयान पर स्पष्ट झलक रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 10 वर्षों में जो कार्य हुए हैं वह ऐतिहासिक व अविस्मरणीय है। उनकी दूरगामी सोच निर्णय से देश में हर वर्ग का जीवन स्तर सुधरा व आत्म निर्भर बना है अगर हम कोरबा की बात करें 2019 में जल जीवन मिशन योजना के तहत 22092 हितग्राही थे। वर्तमान 2023 तक 305387 हितग्राही है, प्रधानमंत्री आवास योजना 3106 हितग्राही 2019 में थे। 2023 तक 115013 हितग्राही है, प्रधानमंत्री किसान सम्मन निधि योजना के तहत कोरबा लोक सभा के 196890 अन्नदाता भाइयों के खाते में राशि हस्तांतरित की गई है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत 2016 में 234182 हितग्राही थे। वर्तमान 2024 में 2684564 हितग्राही इस योजना का लाभ उठा रहे हैं। कोरबा में 2014 में 2573 किलोमीटर तक की सड़क का निर्माण हुआ था।

संक्षिप्त समाचार

लापता तीन बालिकाएं मिलीं दादी के घर

कोरबा(विश्व परिवार)। एकाएक लापता हुई तीन बालिकाओं के कारण तनाव में आए परिजनों को राहत मिली है। पता चला है कि बालिकाएं कुछ किलोमीटर दूर स्थित दादी के घर पहुंच गईं। इसके पीछे सामान्य वजह सामने आई। सीएसईबी पुलिस ने गुम इंसान के मामले को जीरो करने की बात कही है। सीएसईबी चौकी प्रभारी भीम यादव ने बताया कि बुधवार को बरपारा कोहडिया क्षेत्र में एक परिवार की तीन कम उम्र की बालिकाएं घर से कहीं चलीं गई थीं। कुछ देर तक परिजन यही मानकर चल रहे थे कि उनकी उपस्थिति आसपास में होगी ओर वे घर आ जाएंगीं। कई घंटे बीतने पर जब नतीजे नहीं मिले तो चिंता बढ़ी तो इस बारे में पुलिस को सूचना दी गई। इसके बाद तलाश का काम तेज किया गया। संपर्कों के आधार पर जांच पड़ताल करने पर मालूम चला कि बरपारा से खेलते-खेलते बालिकाएं आगे निकल गई और बालकोनगर के चेकपोस्ट जा पहुंचीं। वहां पर उनकी दादी निवासरत है। उनके संरक्षण में बालिकाओं के होने की खबर मिलने से बरपारा के परिजन तनावमुक्त हुए। इसकी जानकारी पुलिस को दी गई है।

एचटीपीएस में श्रमिक दिवस पर कर्मियों का हुआ सम्मान

कोरबा(विश्व परिवार)। हसदेव ताप विद्युत गृह, कोरबा पश्चिम में 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस संयंत्र के कार्यपालक निदेशक(उत्पा.) संजय शर्मा की मेजबानी में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ,इस अवसर पर देश की उन्नति तथा प्रगति एवं औद्योगिक विकास में श्रमशक्ति के अहम योगदान को स्मरण करते हुए श्रम अधिकारों के प्रति जागरूकता के प्रचार प्रसार हेतु रैली का आयोजन संयंत्र प्रमुख संजय शर्मा, अति. मुख्य अभियंता पी.के स्वेन, एम.एस खान, सुधीर कुमार पंड्या, एम.के गुप्ता, आर.के पांडेय एवं वरिष्ठ मुख्य रसायनज्ञ ङ्क ए.के कुरनाल के नेतृत्व में ह.ता.वि.गृह आवासीय परिसर से दर्री डेम के बीच किया गया, जिसके प्रति संयंत्र के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं ठेका-कर्मियों में उत्साह एवं आकर्षण देखने को मिला । कार्यक्रम में विशेष तौर पर श्रम निरीक्षक रामरतन कंवर की उपस्थिति एवं मार्गदर्शन अहम रहा,अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मुख्य अतिथि संजय शर्मा ने कहा कि श्रमिक अधिकारों को समर्पित यह दिवस वर्ष 1889 से दुनिया भर में प्रतिवर्ष मई माह की पहली तारीख को मनाया जाता है । यह एक महत्वपूर्ण अवसर है जब श्रमिकों के संघर्षों और मांगों को सुनिश्चित किया जाता है और उन्हें उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए आवाज उठाने का मौका मिलता है।

बच्चों के लिए लगाया समर कैंप

कोरबा(विश्व परिवार)। इंडस पब्लिक स्कूल दीपका में समर कैंप का आयोजन किया जा रहा है जिसका शुभारंभ 1 मई 2024 को हुआ । समर कैंप के प्रथम दिन ही बच्चों की भीड़ व उत्साह ने यह साबित कर दिया कि वे इस पल के लिए कितने उत्साहित थे । सबसे महत्वपूर्ण व अच्छी बात तो यह है कि इस कैंप में इंडस पब्लिक स्कूल दीपका के विद्यार्थियों के अलावा भी अन्य स्कूलों के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं । अन्य विद्यालयों के विद्यार्थी भी इस कैंप में आकर इस पल का आनंद उठा सकते हैं ।समर कैंप के प्रथम दिन ही विद्यार्थियों की बेतहासा उपस्थिति ने समर कैंप की सफ्लता पर मुहर लगा दी । समर कैंप हेतु पंजीयन अभी जारी है इच्छुक विद्यार्थी वे चाहे किसी भी विद्यालय के हों इस कैंप का हिस्सा बन सकते हैं अर्थात वे इस समर कैंप में अपना पंजीयन करा सकते हैं । समर कैंप के प्रथम दिन में बच्चों ने विभिन्न एक्टिविटी में शामिल होकर अपने समय का सदुपयोग किया । स्वीमिंग पुल में भी बच्चों ने जमकर अठखेलियाँ की । आर्ट एण्ड क्रॉफ्ट में भी बच्चों ने अपनी कल्पनाओं को आकार दिया । पर्सनालिटी डेवलपमेंट व स्टोरी टेलिंग में भी बच्चों ने विशेष रूचि ली । कक्षा 6 वीं से लेकर 8 वीं तक के विद्यार्थियों ने क्रिकेट, फुटबॉल व वॉलीबाल खेलकर बच्चों ने सीखा एवं जमकर लिया आनंद । बच्चों को म्यूजिक के लिए तैयार करने से लेकर उन्हें योगाभ्यास, वाटरप्ले, पपेट मेंकिंग, कूकिंग विदाउट फायर, एरोबिक्स, सैंड प्ले, आर्ट एण्ड क्राफ्ट, फन विद साइंस, म्यूजिक एण्ड मूवमेंट, स्टोरी टेलिंग, टेक्सटाइल डिजाइनिंग, पर्सनालिटी डेवलपमेंट ,कुकिंग विदाउट फायर,वेबपेज डिजाइनिंग,पॉटरी,फन गेम्स,सहित क्रिकेट, वॉलीबॉल व फुटबॉल का प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।गौरतलब है कि सभी एक्टिविटी के लिए स्टॉफके अलावा विशेष प्रशिक्षकों का अनवरत सहयोग मिल रहा है । म्यूजिक एवं डाँस में भी बच्चों ने विशेष रूचि ली । विभिन्न गीतों को बच्चों ने स्वर व लय में गाना सीखा साथ ही विभिन्न प्रकार की डाँस की कलाओं का भी प्रशिक्षण ले रहे हैं । इन सभी के अलावा विद्यार्थी यदि इच्छुक हैं तो कैंप में स्केटिंग व बैडमिंटन का भी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं । सबसे आकर्षक तथ्य यह है कि सभी प्रशिक्षण विशेष प्रशिक्षित ट्रेनर द्वारा दिया जा रहा है साथ ही समर कैंप के माध्यम से बच्चों को वाटर पार्क बिलासपुर का भी फील्ड ट्रीप को सम्मिलित किया गया है ।

कांग्रेस के 5 न्याय और 25 गारंटी पर जनता को पूरा भरोसा

गरीब महिलाओं को 8333 रुपए, आंगनबाड़ी वर्करों, आशा, मिड-डे-मिल कर्मियों को देंगे दोगुना मानदेय

कोरबा(विश्व परिवार)। लोकसभा क्षेत्र की कांग्रेस प्रत्याशी ज्योत्सना चरणदास महंत को जनता का व्यापक आशीर्वाद व समर्थन मिल रहा है। सांसद के पक्ष में कांग्रेस के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने मोर्चा संभाल लिया है। पदाधिकारियों द्वारा कांग्रेस के न्याय पत्र की घोषणाओं 5 न्याय और 25 गारंटी को घर-घर पहुंचाया जा रहा है। ज्योत्सना महंत ने कहा कि कांग्रेस की सरकार गरीब परिवार की महिलाओं का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए नारी न्याय महालक्ष्मी योजना में हर महिने 8333 रुपए दिया जाएगा जो गरीब महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाएगी। आधी आबादी-पूरा हक में केन्द्र सरकार की नई नौकरियों में 50 प्रतिशत आरक्षण का लाभ देंगे। शक्ति का सम्मान करते हुए आशा, मिड-डे-मिल व आंगनबाड़ी वर्करों को दोगुना मानदेय दिया जाएगा। सावित्री बाई फुले हॉस्टल योजना में कामकाजी महिलाओं के लिए दोगुने हॉस्टल बनाए जाएंगे। ज्योत्सना महंत ने कहा कि न्याय पत्र पर महिलाओं ने अपना भरोसा जताया है और इसे पसंद कर रहे हैं। पिछले 10 सालों में किसी भी प्रकार की नौकरी केंद्र सरकार के द्वारा नहीं निकाली गई है। कांग्रेस की सरकार आने पर 30 लाख युवाओं को पक्की सरकारी नौकरी दी जाएगी। सांसद ने कहा कि महंगाई और बेरोजगारी से छुटकारा एकमात्र कांग्रेस की सरकार ही कर सकती है और इसके लिए केन्द्र में सरकार बनाना है। जनसंपर्क के दौरान स्थानीय पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं की उपस्थिति लगातार बनी है।

विश्व मजदूर दिवस के अवसर पर नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर आयोजित

कोरबा(विश्व परिवार)। 1 मई विश्व मजदूर दिवस पर चलो आयुर्वेद की ओर मिशन के तहत निशुल्क रक्त शर्करा जांच, आयुर्वेद-योग चिकित्सा परामर्श एवं उपचार शिविर लायंस क्लब कोरबा एवरेस्ट के तत्वाधान मे दिनाँक 1 मई 2024 बुधवार को पतंजलि आरोग्य केंद्र जैजैपुर में संपन्न हुआ। शिविर में रोगियों को चिकित्सकीय परामर्श एवं उपचार प्रदान करने के साथ साथ उन्हे मासानुसार आहार सेवन तथा पथ्य अपथ्य के विषय में विशेष जानकारी देकर उन्हें जागरूक किया गया। जिसे अपनाकर वे न केवल स्वस्थ रह सकेंगे अपितु रोगमुक्त भी हो सकेंगे। मासानुसार आहार सेवन के विषय मे बताते हुये डॉ.नागेन्द्र नारायण शर्मा ने बताया की अभी बैशाख मास चल रहा है जो अंग्रेजी मास के अनुसार अप्रैल-मई के मध्य मे आता है । इस मास में नये तेल व तली भुनी चीजों का सेवन नहीं करना चाहिये। वहीं इस मास मे बेल का सेवन हितकारी होता है। अत: हमे ऋतु के अनुसार आहार-विहार करना चाहिये। जिससे हम स्वस्थ रह सकें। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रांत के ख्यातिलब्ध आयुर्वेद चिकित्सक, लायंस क्लब कोरबा एवरेस्ट के सचिव लायन डॉ.नागेंद्र नारायण शर्मा, टेमर लायन नेत्रनन्दन साहू, टेल ट्विस्टर कमल धारिया, पीआरओ लायन अश्विनी बुनकर, हर्ष नारायण शर्मा, कशिश यादव, पीहर यादव, चैतन्य यादव के अलावा पतंजलि आरोग्य केंद्र जैजैपुर के संचालक सुरेंद्र यादव ने विशेष रूप से उपस्थित होकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कुदमुरा रेंज में 36 हाथियों का दल

कोरबा(विश्व परिवार)। वनमंडल कोरबा के कुदमुरा रेंज में 36 हाथियों का दल फिर पहुंच गया है। धरमजयगढ़ क्षेत्र से धमके हाथियों के इस दल ने रेंज अंतर्गत गुरमा गांव में एक दर्जन ग्रामीणों के खेतों में लगे धान की फसल को रौंद दिया है। जिससे संबंधितों को काफी नुकसान उठाना पड़ा है। हाथियों के इस दल में 7 नर, 20 मादा तथा 9 शावक शामिल हैं, जिसने क्षेत्र में आते ही उत्पात मचाना शुरू कर दिया है। हाथियों के इस दल के श्यांग व सिमकेदा की ओर आगे बढने की संभावना है। जिसे देखते हुए संबंधित अमले को सतर्क कर दिया गया है। एक अनुमान के मुताबिक हाथियों के ताजा उत्पात में ग्रामीणों को हजारों रुपए की चपत लगी है। वन अमला द्वारा इसका आंकलन कर रिपोर्ट तैयार की जा रही है जिसे मुआवजा स्वीकृति के लिए वरिष्ठ अधिकारियों को सौंपा जाएगा। वन विभाग की ओर से वन्य प्राणियों द्वारा संपत्ति को नुकसान पहुंचाए जाने पर उसकी भरपाई के लिए पीड़ितों को मुआवजा दिए जाने का प्रावधान है। गुरमा क्षेत्र में बड़ी संख्या में हाथियों के विचरण करने से ग्रामीणों में भय का वातावरण है। हालांकि वन विभाग द्वारा हाथियों की गहन निगरानी की जा रही है। उधर कटघोरा वनमंडल के केंदई व एतमानगर परिक्षेत्र में बड़ी संख्या में हाथियों की सक्रियता लगातार बनी हुई है जिससे ग्रामीणों को खतरा कायम है। यहां वन विभाग द्वारा हाथियों की निगरानी थर्मल ड्रोन के जरिए कराई जा रही है। इसके लिए विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों की बारी-बारी से ड्यूटी लगाई गई है जो मौके पर पहुंचकर हाथियों को निगरानी में जुटे रहते हैं। डीएफओ कुमार निशांत भी हाथियों की स्थिति पता लगाने रात में स्वयं जंगल की ओर निकल पड़ते हैं।

25 मिनट के भाषण में अमित शाह ने महंगाई बेरोजगारी पर कोई बात नहीं की : चरणदास

लोगों पर अपना एजेण्डा थोप कर चले गए, कटघोरा का नाम तक नहीं लिया

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने कोरबा लोकसभा क्षेत्र के ग्राम पसान में जनसमूह को संबोधित किया। एक ओर जहां कटघोरा में भाजपा के केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह चुनावी सभा ले रहे थे तो दूसरी ओर पसान में नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत कांग्रेस प्रत्याशी ज्योत्सना महंत के लिए प्रचार-प्रसार में जुटे रहे। अपने प्रचार के दौरान डॉ. महंत ने अमित शाह की सभा को लेकर कहा कि उन्होंने तो अपने लगभग 25 मिनट के भाषण में कटघोरा का नाम तक नहीं लिया। अमित शाह ने महंगाई, बेरोजगारी, किसान, मजदूर तक का जिक्र नहीं किया। वे राम-रहमान, हिन्दू-मुसलमान की बात करते रहे। 25 साल का एजेंडा जनता पर थोप कर चले गये। वे आरक्षण की बात तो किये लेकिन लोकसभा का उद्घाटन, राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर दलित पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और वर्तमान राष्ट्रपति द्रौपती मुर्मू को आमंत्रण तक नहीं दिया। जहां अमित शाह 20 करोड़ गरीबों को गरीबी रेखा से बाहर निकालने की बात का झूठ परोस कर चले गए वहीं 80 करोड़ गरीबों को मिल रहे चावल में कटौती की बात पर कुछ नहीं बोले। कोरोना का टीका पर बखान तो किया लेकिन टीका बनाने वाली कंपनी से कितना चन्दा लिया गया, यह नहीं बताए। इलेक्टोरल बॉन्ड पर भी वे कुछ नहीं बोले। 19 साल के जवानों को ये लोग रिटायरमेंट दे रहे हैं। डॉ.महंत ने कहा कि केन्द्रीय गृहमंत्री कटघोरा आकर भी इससे सटे हसदेव अरण्य क्षेत्र में लाखों वृक्षों की कटाई के मामले में चुप्पी साधे रहे। सरोज पाण्डेय हर बार, बार-बार गांव आती-जाती रही हैं, इतना बड़ा झूठ बोलकर वे यह बताकर चले गये कि झूठ बोलो, बार-बार बोलो, जोर-जोर से बोलो। उन्होंने 400 पार का नारा इसलिए दिया क्योंकि आरक्षण को खत्म करना है। गृहमंत्री अमित शाह ने अपनी पूरी सभा में 15 लाख का वादा, विदेशों से काला धन लाने की बात का वादा, 500 रूपए में सिलेंडर देने का वादा, किसानों की कर्ज माफी के विषय पर एक भी बात नहीं की।

कोई भी मतदाता मतदान से न छूटे, हम सबका हो यह प्रयास-कलेक्टर अजीत वसंत

श्रमिक दिवस पर एनटीपीसी में आयोजित मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में पहुंचे कलेक्टर

दी श्रमिक दिवस की बधाई, अनिवार्य रूप से मतदान करने की अपील की

कोरबा(विश्व परिवार)। एनटीपीसी द्वारा श्रमिक दिवस के मौके पर आयोजित मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति प्रदान करते हुए श्रमिकों, अधिकारी कर्मचारियों व आम मतदाताओं से 07 मई को होने वाले मतदान में अनिवार्य रूप से मतदान करने की अपील की। उन्होने श्रमिक दिवस की शुभकामनाएं दी तथा मतदाता जागरूकता कार्य हेतु अधिकारी कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया। कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने कहा कि कोई भी मतदाता मतदान से न छूटे, हम सबका यह सतत प्रयास होना चाहिए। इस मौके पर जिला पंचायत के सीईओ श्री संबित मिश्रा, निगम आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई, एनटीपीसी एचओपी श्री सरित माहेश्वरी, सीआईएसएफ कमांडेंट श्री राजीव कुल्हारी विशेष रूप से उपस्थित थे। यहाँ उल्लेखनीय है कि लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के मार्गदर्शन में जिले में व्यापक रूप से मतदाता जागरूकता कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं, कोरबा स्थित सार्वजनिक एवं औद्योगिक प्रतिष्ठानों द्वारा भी मतदाता जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। एक मई को श्रमिक दिवस के अवसर पर एनटीपीसी जमनीपाली केारबा द्वारा विशेष मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का वृहद आयोजन किया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत ने आयोजन में अपनी गरिमामयी उपस्थिति प्रदान करते हुए श्रमिकों अधिकारी कर्मचारियों व आम मतदाताओं से अपील की कि वे अपने मताधिकार का अनिवार्य रूप से उपयोग कर मतदान अवश्य करें तथा लोकतंत्र की मजबूती में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कराएं। उन्होने कहा कि कोई भी मतदाता मतदान न छूटने पाए, शत प्रतिशत मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग कर मतदान करें, इस दिशा में सभी का निरंतर प्रयास होना चाहिए। इस मौके पर उन्होने श्रमिक दिवस की अपनी हार्दिक शुभकामनाएं भी श्रमिकबंधुओं को दी। कार्यक्रम में उपस्थित जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री संबित मिश्रा, निगम आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई व एनटीपीसी एचओपी सरित माहेश्वरी ने भी उपस्थित श्रमिकों, मतदाताओं से अनिवार्य रूप से मतदान करने की अपील की। इस अवसर पर निगम के अपर आयुक्त श्री विनय मिश्रा,उपायुक्त बी.पी.त्रिवेदी, जोन कमिश्नर ए.के.शर्मा, एनटीपीसी के अधिकारी सुमित राय सहित प्रतिष्ठान के अधिकारी कर्मचारीगण व श्रमिकबंधु उपस्थित थे। मतदाताओं को दिलाई मतदाता शपथ - कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत द्वारा उपस्थित श्रमिकों, अधिकारी कर्मचारियों व अन्य मतदाताओं को मतदाता शपथ ग्रहण कराई गई।

संपादकीय

आरक्षण का मुद्दा गरमाया

चुनाव प्रचार में इन दिनों आरक्षण का मुद्दा गरमाया हुआ है। प्रारंभिक तौर पर आरक्षण को सबसे निचले वर्गों की जातियों को आर्थिक तथा राजनीतिक संबल प्रदान करने के लिए वैधानिक तौर पर आरक्षण प्रदान किया गया था। बाद में आरक्षण का विस्तार होता गया और इसमें नये-नये जाति समूह शामिल होते चले गए।आरक्षण प्राप्त करने के लिए जाट और मराठा जैसे शक्तिशाली समूहों को आंदोलन की राह पकड़नी पड़ी। दरअसल, जो आरक्षण निचली पायदान पर खड़े जाति समूहों के उत्थान के लिए था, वह सभी जाति समूहों के लिए राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने का हथियार बन गया। कहने की जरूरत नहीं है कि आज आरक्षण भारतीय समाज के एक बहुत बड़े वर्ग में असंतोष और चिंता का कारक बना हुआ है।हिन्दू समाज के अनारक्षित जाति समूह मानते हैं कि उनके साथ अन्याय किया जा रहा है। ऐसी सूरत में एक ऐसे आर्थिक ढांचे पर बल दिए जाने की जरूरत थी जिसमें बिना आरक्षण की सीढ़ी के सभी निचले वर्ग के लोगों को उत्थान के अवसर प्राप्त हों और जातीय आग्रह सामाजिक विग्रह के कारण न बनें लेकिन अब आरक्षण की नीति एक चिंताजनक मोड़ पर ले आई है। एक ओर जहां कांग्रेस के नेता विशेषकर राहुल गांधी आरोप लगा रहे हैं कि मोदी तीसरी बार सत्ता में आए तो संविधान बदल देंगे और आरक्षण खत्म कर देंगे। दूसरी ओर, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी हर सभा में कह रहे हैं कि कांग्रेस ने आरक्षण को मुस्लिम तुष्टिकरण का नया औजार बना लिया है। वह बार-बार कर्नाटक का उदाहरण दे रहे हैं जहां कांग्रेस ने सभी मुस्लिम जातियों को पिछड़े वर्ग में शामिल करके पिछड़े वर्ग के कोटे से ही 4 प्रतिशत का आरक्षण दे दिया जिसे बाद में भाजपा सरकार ने निरस्त कर दिया। मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा जहां भाजपा सरकार के फैसले पर रोक लगा दी गई है। मोदी अपनी हर सभा में खुलकर कह रहे हैं कि अगर कांग्रेस सत्ता में आई तो दलित और पिछड़ों का आरक्षण समाप्त कर मुसलमानों को दे देगी। संविधान में धर्म के आधार पर आरक्षण की व्यवस्था नहीं है। लेकिन कांग्रेस ने चोर दरवाजे से कर्नाटक में आरक्षण देकर जो कदम उठाया है, उसके दुष्परिणाम समझ नहीं पा रही। बेशक, भाजपा को विरोध का बड़ा चुनावी मुद्दा मिल गया है।

जलवायु परिवर्तन और भारतीय चुनाव......

कुलभूषण उपमन्यु

पिछले 15 वर्षों में भारत में 3 लाख हेक्टेयर वन भूमि का उपयोग बड़ी योजनाओं के लिए बदला जा चुका है संयुक्त राष्ट्र संघ की विश्व मौसम विज्ञान संस्था ने एशिया में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर एक रिपोर्ट गत सप्ताह जारी की है, जिसमें यह बात सामने आई है कि वैश्विक तापमान वृद्धि का प्रभाव एशिया में विश्व औसत से ज्यादा पड़ रहा है। इस क्षेत्र में कई देशों में आज तक का अधिकतम तापमान दर्ज किया गया है जिसके कारण इस महाद्वीप में 2023 में 90 लाख लोग बाढ़ों और तूफानों से प्रभावित हुए। दो हजार लोग काल का ग्रास बन गए। जलवायु परिवर्तन ने बाढ़, सूखे और तूफानों की घटनाओं को न केवल बढ़ाया है, बल्कि उनकी भयानकता को भी बढ़ाया है, जिसका दुष्प्रभाव वहां के समाजों, अर्थ व्यवस्थाओं और मानव जीवन पर पड़ा है। जलवायु परिवर्तन के मुख्य सूचकों जैसे कि जमीनी तापमान में वृद्धि, ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्र के जलस्तर के बढने से बिगड़ती हुई स्थिति का पता चल रहा है। 1960-1990 के दौर के मुकाबले तापमान वृद्धि की दर लगभग दुगनी हो गई है। 2023 में जहां एक ओर सूखा पड़ा, वहीं दूसरी ओर भयानक बाढ़ें आईं। चीन की बाढ़ों और भारत में सूखे से 65 बिलियन डॉलर का आर्थिक नुकसान होने का अनुमान लगाया गया है। चीन में 140 वर्षों का वर्षा का रिकार्ड टूट गया। वहीं दक्षिण पश्चिमी चीन भारी सूखे की चपेट में रहा। भारत में लू के कारण 100 लोगों की मौत हो गई और सिक्किम का तीस्ता-3 बांध बाढ़ की चपेट में आकर ध्वस्त हो गया, जिस दुर्घटना में 100 लोग अपनी जान गंवा बैठे। बढ़ते तापमान के कारण इस तरह की घटनाओं के बढने की संभावना है। भारत और बांग्लादेश में लू की संभावनाओं में 30 गुणा वृद्धि की आशंका पैदा हो गई। एशिया के तेज गति से बढ़ते तापमान के चलते इसके ग्लेशियर भी खतरे में पड़ गए हैं। मुख्य 22 ग्लेशियरों में से 20 में भारी नकारात्मक बदलाव हुए पाए गए हैं, यानी ग्लेशियरों के पिघलने की गति तेज हुई है। तापमान वृद्धि से समुद्र का जल भी ज्यादा गर्म हो रहा है जिसके कारण भारी बारिश और समुद्री तूफानों का खतरा बढ़ा है। पिछले चार दशकों में अरब सागर में समुद्री तूफानों की संख्या में डेढ़ गुणा वृद्धि हुई है और तूफानों की घातकता भी बढ़ी है। जुलाई और अगस्त 2023 में हिमाचल और उत्तराखंड में भारी बारिश के कारण भूस्खलन के कारण हुई भारी तबाही का भी रिपोर्ट में जिक्र किया गया है जिसको भारत सरकार ने आपात स्थिति घोषित किया। इन स्थितियों से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन के विषय में भी काफी कुछ करने की जरूरत पर रिपोर्ट में प्रकाश डाला गया है। हालांकि भारत ने इस विषय में कुछ मानकों पर अच्छी प्रगति की है, फिर भी काफी कुछ किए जाने की जरूरत है। पूर्व चेतावनी व्यवस्था में सुधार करके आपदाओं में होने वाली हानि को 30 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। रिपोर्ट में आर्थिक असमानता के चलते जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के और ज्यादा चिंताजनक होने की बात कही गई है। जाहिर है कि बढ़ते तापमान का प्रत्यक्ष डंक उन गरीब लोगों को भुगतना पड़ता है जिनके पास आवास की व्यवस्था नहीं है या जिन्हें दैनिक मजदूरी पर निर्भर रहना पड़ता है, या किसान जिनकी फसल खुले में ईश्वर भरोसे रहती है। उनके लिए जलवायु अनुकूलन व्यवस्था खड़ी करना भी संभव नहीं होता। बढ़ते तापमान से फसलों की उत्पादकता पर भी विपरीत प्रभाव पडने के कारण खाद्य सुरक्षा पर भी खतरा पैदा होने की संभावना बन सकती है। इस दिशा में जलवायु की विपरीत स्थितियों को झेलने में सक्षम फसलों और फसल किस्मों पर ज्यादा शोध और प्रचार प्रसार की जरूरत है। इस दिशा में पुराने समय में प्रचलित श्री धान्य फसलों कोदा, रामदाना, स्वांक, बाजरा आदि का प्रचार प्रसार करके अच्छी पहल की जा रही है। किन्तु कार्बन उत्सर्जन करने वाली ऊर्जा उत्पादन तकनीकों और बड़े प्रोजेक्टों, खनन परियोजनाओं के कारण वनों के विनाश से कार्बन प्रचूषण क्षमता में आ रही कमी की चुनौतियां यथावत बनी हैं और बढ़ भी रही हैं। पिछले 15 वर्षों में भारतवर्ष में 3 लाख हेक्टेयर वन भूमि का उपयोग इस तरह की बृहदाकार योजनाओं के लिए बदला जा चुका है और यह क्रम सतत रूप से जारी है। इतनी चिंताजनक स्थिति के बावजूद वर्तमान चुनावों में यह मुद्दा जनता के बीच महत्वपूर्ण नहीं बन सका है। पर्यावरण से जुड़े दिवसों पर चेतना रैली निकालने, कुछ अच्छे अच्छे नारे लगाने, भाषण प्रतियोगिता आयोजित करने या ज्यादा से ज्यादा चुनाव मैनिफेस्टो में पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन से जुड़े वादे उछालने तक हम सीमित होते जा रहे हैं। राजनीतिक दल भी जनचेतना जगाने के इस मौके का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। आम मतदाता निजी आर्थिक लाभ से ज्यादा सोचने को तैयार नहीं है। इसलिए राजनीतिक दल भी इस मुद्दे को गंभीरता से नहीं लेते हैं। हिमालय के नाजुक परिस्थिति संतुलन के दृष्टिगत यह मामला हिमालय में और भी ज्यादा संगीन हो जाता है। किन्तु हम प्राकृतिक आपदा का बहाना घड़ कर आत्म संतुष्टि कर लेते हैं या खुद को धोखा देते रहते हैं, जबकि हम सब समझते हैं कि जलवायु परिवर्तन मानव निर्मित गलतियों का नतीजा है। फिर भी हम न तो आत्म संयम से अनावश्यक वस्तुओं, पदार्थों के उपयोग से बचना चाहते हैं, न ही सरकारों के सामने अपनी पर्यावरण विषयक चिंताओं को रख कर दबाव बना कर नीतिगत बदलाव की मांग रखना चाहते हैं। सरकारें अपने आप विकास को सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर से नाप कर आगे बढ़ती हैं। उन्हें पर्यावरण जैसे मुद्दे उतने लुभावने नहीं लगते। दुनिया भर में सरकारें जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर टालमटोल करते हुए, शर्माते हुए कुछ थोड़ा बहुत कार्य करती रहती हैं। कुछ गंभीरता जब आपदाएं आती हैं तब दिखाई देती है, धीरे धीरे प्रकृति के ऊपर दोषारोपण करके समस्या भूल जाती है। इस बार कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी दोनों ने ही इस मुद्दे पर कुछ लक्ष्य अपने चुनावी मैनिफेस्टो में रखे हैं। किन्तु पिछले अनुभव के आधार पर ज्यादा आशा नहीं जगती है। शिमला में 2009 में जलवायु कॉन्क्लेव हुआ था, उसके साथ ही हिमालयी परिस्थिति तंत्र को बचाने के लिए कुछ लक्ष्य तय किए गए थे, किन्तु दोनों प्रमुख दलों को पर्याप्त समय मिलने के बावजूद विशेष प्रगति इस दिशा में नहीं हो सकी। वैश्विक स्तर और हिमालय के स्तर पर जलवायु परिवर्तन की चुनौती के कारण बढ़ती प्राकृतिक आपदाओं के चलते अब समय आ गया है जब इस मुद्दे पर आम जनता और राजनीतिक दलों को चुनावी राजनीति के केंद्र में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे को रखना चाहिए।

विशेष लेख

इंतजामों को अधिक सक्रिय करने की जरूरत है...........

हमारे देश के वनों में गर्मियों के दिनों में आग लगना एक लगातार सिलसिला है। अप्रैल का महीना शुरू हुआ कि आग से जंगल धधकने लगते हैं। जंगल की आग पर्यावरण की दृष्टि से तो खतरनाक है ही जनजीवन और बायोडायर्वसटी की दृष्टि से भी हानिकारक है। ऐसे समय में जब जंगलों में आग लगती है तो देखा गया है कि उसकी तैयारी में सरकार विफल रही है। देश के वनों में अप्रैल माह में आग की घटनाओं को देखें तो देश में हाल फिलहाल 361 जगह वनों में आग लगी हैं। इन घटनाओं की निगरानी को फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया की साइट पर लांच बीटा संस्करण एसएनपीपी - वीआईआईआरएस का 10 अप्रैल, 2024 का भारत के वनों में लगी भीषण आग का मौजूद आंकड़ा बताता है कि सबसे अधिक आंध्र प्रदेश में 122, तेलंगाना में 55, छत्तीसगढ़ में 47, उत्तराखंड में 32, बिहार में 23, ओडिसा में 22, उत्तर प्रदेश में 17 सहित 21 राज्यों में 361 जगह आग लगी थी जो 13 अप्रैल को घट कर काबू होने के बाद 33 रह गई। 1अप्रैल को देश के वनों में 132 बड़ी आग लगी थी जो 10 अप्रैल को 361 जगह तक पहुंच गई है। अप्रैल माह में पिछले 7 दिनों का आंकड़ा देखें तो एक्टिव आग की घटनाओं में टॉप फाइव राज्यों में छत्तीसगढ़ में 166, आंध्र प्रदेश में 248, मध्य प्रदेश में 207, ओडिसा में 146 और असम में 139 जगहों पर बड़ी आग लगी। वहीं 1 नवम्बर, 2023 से 2024 में बड़ी आग की घटनाओं में टॉप फाइव राज्यों में आंध्र प्रदेश में 860, मध्य प्रदेश में 719, तेलंगाना 688, महाराष्ट्र में 547 और छत्तीसगढ़ में 527 बार आग लगी, जबकि वर्ष 2022-2023 में तो पूरे देश के वनों में 12562 आग की घटनाएं हुई। जंगल की आग से वनों का क्षरण तो होता ही है बहुमूल्य वन संपदा और कार्बन भी नष्ट हो जाते हैं। वनों का पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रभावित होता है। यह देखा गया है फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार जंगल की आग को मॉनिटर करने के लिए भारत में 2004 से शुरू सेटेलाइट की रिमोट सेंसिंग मोडिस अर्थात मॉडरेट रेजोल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रो रेडियोमीटर सेंसर और 2017 से भारतीय सेटेलाइट से सम्पूर्ण भारत में एसएनपीपी-वीआईआईआरएस अर्थात सुओमी-नेशनल पोलर आर्बिटिंग पार्टनरशिप-विजिबल इंफ्रारेड इमेजिंग रेडियोमीटर सूट के साथ जीआईएस टूल्स की मदद से वनों की आग को मॉनिटर किया जा रहा है। देश का कुल 32,87,469 वर्ग किलोमीटर भौगोलिक क्षेत्र है। नवीनतम आईएसएफआर 2021 के अनुसार देश का कुल 7,13,789 वर्ग किलोमीटर वन आवरण है। जो देश के भौगोलिक क्षेत्र का 21.71 प्रतिशत है। वन सर्वे ऑफ इंडिया का अनुमान है कि देश में 36 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र में बार-बार आग लगती रहती है। देश के करीब 4 प्रतिशत वन क्षेत्र में अधिक तो 6 प्रतिशत भाग में सबसे अधिक खतरा पाया गया है। ग्लोबल फॉरेस्ट वाच के अनुसार विश्व स्तर पर आग से वर्ष 2001 से 2022 के बीच 126 मिलियन हेक्टेयर वनों का नुकसान हुआ। इनमें वर्ष 2016 ऐसा वर्ष रहा जिसमें आग से सबसे अधिक 9.63 मिलियन हेक्टेयर वन आवरण का नुकसान हुआ। पिछले कुछ दशकों में आग की घटनाओं को देखें तो 2001 से 2022 के बीच भारत में आग की घटनाओं से 35.9 हेक्टेयर वृक्ष आवरण को नुकसान और 2.15 मेगा हेक्टेयर वृक्ष आवरण का नुकसान अन्य कारणों से हुआ। इसमें भी 2008 में आग से सबसे अधिक कुल 3.5 प्रतिशत वृक्ष आवरण का नुकसान हुआ। अगर 12 अप्रैल 2021 से 8 अप्रैल 2024 के बीच आज की घटनाओं की बात की जाए तो 5,29,248 ङ्कढ्ढढ्ढक्र के माध्यम से बड़ी आज की घटनाएं रिपोर्ट की गई है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार विश्व में हर वर्ष करीब 7 करोड़ हेक्टेयर वन क्षेत्र आग लगने की घटनाओं से प्रभावित होता है। इससे बड़े स्तर पर पर्यावरणीय और आर्थिक क्षति होती है। ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच के अनुसार विश्व में सन 2010 में 3.92 गीगा हेक्टेयर वृक्ष आवरण था जो पृथ्वी के 30 प्रतिशत से अधिक भू-भाग में फैला हुआ था, लेकिन 2023 में विभिन्न कारणों से 28.3 मिलियन हेक्टेयर वृक्ष आवरण कम हो गया। सन 2001 से 2023 तक वैश्विक स्तर पर 488 मिलियन हेक्टेयर वृक्ष आवरण की हानि हुई जो 2000 के बाद से वृक्ष आवरण में 12 प्रतिशत की कमी के बराबर है, जबकि सन 2002 से 2023 के बीच कुल 76.3 मिलियन हेक्टेयर आद्र प्राथमिक वन कम हो गया। भारत की बात करें तो सन 2010 में 31.3 मिलियन हेक्टर प्राकृतिक वन थे जो कि इसकी कुल भूमि का 11 फीसद था, लेकिन वर्ष 2023 में 134 किलो हेक्टेयर आद्र प्राकृतिक वन की हानि हो गई। वर्ष 2002 से 2023 के बीच भारत में 414 हेक्टेयर आद्र प्राथमिक वन खो दिए। इस तरह भारत में कुल 4.1 प्रतिशत वन क्षेत्रफल कम हो गया।

आब-ए-तल्ख की तिजारत अपराध को दावत

शराब की तस्करी व अवैध बिक्री मुल्क में अस्थिरता का तनाजुर पैदा कर रही है। लिहाजा समाज में अमन कायम करने के लिए सैकड़ों लोगों की मौत का कारण बन रही जहरीली शराब का अवैध कारोबार नेस्तनाबूद करना होगा इतिहास साक्षी रहा है कि मदिरा की तिजारत, खपत व मांग में कभी कमी नहीं आई है। मद्यपान का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। सुरापान का प्रचलन समाज में हर वर्ग के लोगों में व्यापक रहा है। आचार्य चार्वाक जैसे महान् दार्शनिक ने सदियों पूर्व अपने श्लोकों में सुरापान का उल्लेख किया था। मदिरा की नशीली तासीर को कई शायर व फनकार अपने अंदाज में बयान करते आए हैं। 'हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी सी जो पी ली है'- अकबर इलाहाबादी के इन अल्फाज को पाकिस्तान के मशहूर गायक 'गुलाम अली' ने अपनी आवाज से बयान करके सुरा प्रेमियों को नसीहत देकर चेताया था। जाहिर है मदिरा का सेवन हो, अवैध तिजारात हो या देर रात तक खुली रहने वाली मधुशालाओं में आब-ए-तल्ख बोतलों में सजी हो, मदिरा हंगामा जरूर मचाती है। वर्तमान में आब-ए-तल्ख के घोटाले को लेकर देश की राजधानी चर्चा का मरकज बन चुकी है। देश में चुनावों का दौर चल रहा है। आबकारी विभाग व अन्य सुरक्षा एजेंसियों द्वारा अवैध शराब को कब्जे में लेने की खबरें समाचारपत्रों की सुर्खियां बन रही हैं। मद्यपान के प्रति निगाह-ए-नाज के जज्बात रखने वाला मदिरा प्रेमी वर्ग सुरापान को आब-ए-हयात मानता है, चूंकि आब-ए-तल्ख सुरा प्रेमियों को एक काल्पनिक दुनिया के हसीन ख्वाब दिखाती है। मदिरा की तिजारत को हमारी हुकूमतें अर्थतंत्र की मजबूती का जरिया मानती हैं। अल्कोहल पर लगने वाली एक्साइज ड्यूटी से राज्य सरकारों को एक बड़ा राजस्व हासिल होता है। इसलिए सियासी निजाम शराब को नशा नहीं मानता। मगर शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन बिगाडने वाली शराब किस हद तक अपना दुष्परिणाम दिखाती है, यह छिपा नहीं है। गत ग्यारह अप्रैल 2024 को हरियाणा के महेंद्रगढ़ में एक निजी स्कूल वैन के भीषण हादसे का शिकार होने से आठ मासूम छात्रों की मौत हो गई, क्योंकि स्कूल वैन का चालक शराब के नशे में धुत था। अवैध शराब के जहरनुमां कारोबार ने कई घरों के चश्म-ओ-चिराग बुझाकर लाखों लोगों की शब-ए-महताब को जुल्मत में तब्दील कर दिया है। 22 मार्च 2024 को पंजाब के संगरूर जिले में बीस से ज्यादा लोगों की मौत का कारण जहरनुमां शराब बनी। संगरूर में जहरीली शराब से हुई मौतों के बाद राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग व चुनाव आयोग भी हरकत में आ गए। जहरीली शराब देश में एक मुद्दत से मौत का तांडव मचा रही है। लेकिन नशे के अजाब से उपजे मातम को शांत करने के लिए पीड़ितों के आब-ए-चश्म पर मुआवजे व सियासी आश्वासनों का मरहम लगा कर मसले को रफा दफा किया जाता है। चश्म-ए-पलक की रौशनी छीनकर चश्मों की सौगात बांटने की कोशिश होती है। शराब तस्करी पर प्रशासन व सुरक्षा एजेंसियों की नाकामी को छुपाने के प्रयास किए जाते हैं। आर्थिक तंगी के कारण कई लोग शराब माफिया के प्रलोभन में आकर सस्ते दामों पर मिलने वाली नकली शराब खरीद लेते हैं। अवैध शराब ही मौत का कारण बनती है। गुरबत में जीवनयापन करने वाले लोग अदालतों में कानूनी लड़ाई लडने में असमर्थ होते हैं। इसी कारण सैकड़ों लोगों को मौत की आगोश में सुलाने वाले नशे के सरगना कानूनी दांवपेंच से बच निकल कर अपनी नशे की सल्तनत को बेखौफहोकर चलाते हैं। देश में नशा उन्मूलन के नाम पर कई विशेष दिवस मनाए जाते हैं। नशा मुक्ति केन्द्रों का संचालन भी हो रहा है। वहीं मयखानों की संख्या में भी रिकार्ड वृद्धि दर्ज हो रही है। शादी समारोहों में होने वाला फसाद व सडकों पर कहर मचाती तेज रफ्तार से बढ़ती दुर्घटनाएं, घरेलू हिंसा तथा सामाजिक परिवेश में बढ़ती आपराधिक गतिविधियों के पीछे ज्यादातर पसमंजर मद्यपान का ही है। त्योहार, पर्व के अवसर पर मदिरा की डिमांड जोर पकड़ लेती है। कई राज्यों के चुनावों में नशे का समूल नाश भी एक अहम मुद्दा बनता है। नशे की गिरफ्त में जा रहे मुल्क के मुस्तकबिल युवा वर्ग पर चिंता व्यक्त की जाती है, मगर मदिरा के इस्तेमाल के बिना इंतखाबी तश्हीर की दर्जा-ए-हरारत अधूरी रहती है। भारत का शराब उद्योग दुनिया में सबसे बड़े उद्योगों में से एक है। देश के कुछ राज्यों में शराबबंदी जरूर हुई है, लेकिन हकीकत में कोई भी राज्य तथा अवाम ईमानदारी से शराब निषेध के पक्ष में नहीं है। इसलिए कई राज्यों में मद्यनिषेध के प्रयास असफल हुए। शराबबंदी का एक लंबा सफर तय करने वाले राज्य गुजरात में सुरा प्रेमी सन् 2018 से गुजरात उच्च न्यायालय के समक्ष कई याचिकाएं दर्ज करके शराबबंदी को चुनौती पेश कर रहे हैं। एक देश एक कानून का हवाला देकर शराब निषेध कानून को राज्य से रुखसत करने की मांग हो रही है। सुरा प्रेमियों की दलील है कि शराब पीने को भी 'राइट टु प्राइवेसी' के तहत बुनियादी अधिकार माना जाए। याचिकाओं में यह भी तर्क है कि 'गुजरात निषेध अधिनियम 1949' राज्य में मदिरा की अवैध तिजारत रोकने में अप्रभावी है। बिहार राज्य में भी शराबबंदी को न्यायालय में चुनौती मिल चुकी है, लेकिन भारत में शराब राज्य का अपना विषय है। संविधान के अनुच्छेद 47 के तहत प्रत्येक राज्य को मादक पेय व स्वास्थ्य के लिए हानिकारक दवाओं के सेवन पर प्रतिबंध का अधिकार है। राजस्व जुटाने के लिए किसी सूबे को आब-ए-तल्ख की दारुल हुकूमत बनाकर लोगों को नशे की दलदल में उतार देना कितना उचित है, इस मुद्दे पर मंथन होना चाहिए। स्मरण रहे सुरा प्रेमियों की ख्वाहिश के आगे बेबस होकर अमरीका तथा सोवियत संघ जैसे देशों ने शराबबंदी के फैसले रद्द कर दिए थे। बहरहाल कई परिवारों की बर्बादी का अस्बाब बन चुकी जहरीली मदिरा की अवैध तिजारत शराब माफिआओं के लिए फायदेमंद बिजनेस बन चुकी है। शराब की तस्करी व अवैध बिक्री मुल्क में अस्थिरता का तनाजुर पैदा कर रही है।

वैश्विक ऊंचाई पर खिलौना कारोबार

डा. जयंतीलाल भंडारी

अधिकांश भारतीय खिलौने ई-कॉमर्स वेबसाइटों पर उपलब्ध कराए जाने चाहिएं, ताकि घरेलू खिलौनों की बिक्री को और बढ़ाया जा सके। यह भी जरूरी है कि सरकार के द्वारा प्रस्तावित की गई पारंपरिक और यांत्रिक खिलौनों दोनों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना शीघ्र शुरू की जाए। देश में सुगठित खिलौना प्रशिक्षण और डिजाइन संस्थान की स्थापना को मूर्तरूप देना होगा हाल ही में केंद्रीय व्यापार एवं उद्योग मंत्रालय के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक भारत के खिलौना उद्योग ने वित्त वर्ष 2014-15 से वित्त वर्ष 2022-23 के बीच तेजी से प्रगति की है और निर्यात में 239 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई तथा आयात में 52 प्रतिशत तक की गिरावट आई है। नि:संदेह इस समय पूरी दुनिया में यह रेखांकित हो रहा है कि 'मेक इन इंडिया' अभियान से भारत का खिलौना उद्योग वैश्विक ऊंचाई पर है। स्थिति यह है कि 'मेक इन इंडिया' अभियान ने खिलौना विनिर्माण क्षेत्र में चीन को झटका देते हुए खिलौना निर्माण को भारत के लिए फायदे का सौदा साबित कर दिया है। गौरतलब है कि चीन से खिलौनों की खरीददारी करने वाले कई खरीददार अब तेजी से भारत की ओर रुख कर रहे हैं। यह कोई छोटी बात नहीं हैं कि दुनिया में कोई एक दशक पहले खिलौनों की भारत से मुश्किल से ही किसी तरह की खरीददारी होती थी। लेकिन मेक इन इंडिया के कारण कई बड़ी-बड़ी खिलौना कंपनियों ने भारत में खास तौर से दिल्ली में अपना आधार तैयार किया है, जो आज अंतरराष्ट्रीय खिलौना कंपनियों को भी आपूर्ति करती है। इस समय हैस्ब्रो, मैटल, स्पिन मास्टर और अर्ली लर्निंग सेंटर जैसे खिलौनों के वैश्विक ब्रांड आपूर्ति के लिए भारत पर अधिक निर्भर हैं। साथ ही खिलौनों के लिए विश्व प्रसिद्ध इटली की दिग्गज कंपनी ड्रीम प्लास्ट, माइक्रोप्लास्ट और इंकास आदि खिलौनों के लिए अपना ध्यान धीरे-धीरे चीन से भारत पर केंद्रित कर रही हैं। अब वह समय बीत गया है कि जब पांच-छह वर्ष पहले तक भारत खिलौनों के लिए बहुत कुछ दूसरे देशों पर निर्भर था और भारत में 80 फीसदी से अधिक खिलौने चीन से आयात किए जाते थे। साथ ही लगातार विभिन्न सर्वेक्षणों में कहा जा रहा था कि चीन से आयातित दो-तिहाई खिलौने असुरक्षित थे। चीनी खिलौने में सीसा, कैडमियम और बेरियम के असुरक्षित तत्व पाए गए थे। अब भारत से खिलौनों के तेजी से बढ़ते हुए निर्यात और घटते हुए आयात का नया लाभप्रद अध्याय भी रेखांकित हो रहा है। उल्लेखनीय है कि इस समय देश और दुनिया में भारतीय खिलौना उद्योग की बहुत कम समय में हासिल ऐसी सफलता रेखांकित हो रही है, जिसकी कभी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। इस समय चारों ओर भारत के सस्ते और गुणवत्तापूर्ण खिलौना उद्योग का सुकूनदेह परिदृश्य उभरकर दिखाई दे रहा है। साथ ही भारत का खिलौना निर्यात पांच-छह वर्षों में तेजी से बढकर 2600 करोड़ रुपए के स्तर पर पहुंच गया है। भारत से अमरीका, ब्रिटेन, यूरोपीय यूनियन, आस्ट्रेलिया, यूएई, दक्षिण अफ्रीका सहित कई देशों को खिलौने निर्यात किए जा रहे हैं। इस समय भारतीय खिलौना उद्योग का कारोबार करीब 1.5 अरब डॉलर का है जो वैश्विक बाजार हिस्सेदारी का 0.5 फीसदी मात्र है, लेकिन जिस तरह भारत में खिलौना उद्योग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है, उससे खिलौना उद्योग छलांगे लगाकर बढ़ते हुए इसी वर्ष 2024 में 3 अरब डॉलर तक की ऊंचाई पर पहुंचने की संभावनाएं रखता है। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि देश और दुनिया में भारतीय खिलौना बाजार को ऊंचाई मिलने के कई कारण हैं। इसमें कोई मत नहीं है कि 'मन की बात' के अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बार-बार देश के लोगों को स्वदेशी भारतीय खिलौनों को खरीदने, घरेलू डिजाइनिंग को सुदृढ़ बनाने, भारत को खिलौनों के लिए एक वैश्विक विनिर्माण हब बनाने की अपील की। खिलौनों की बिक्री के लिए भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) की मंजूरी जरूरी होना, संरक्षणवाद, चीन-प्लस-वन रणनीति और मूल सीमा शुल्क बढ़ाकर 70 प्रतिशत किए जाने से भारत के खिलौना उद्योग में तेजी आई है। बीआईएस मानक चिन्ह वाले खिलौनों के निर्माण के लिए बीआईएस ने घरेलू निर्माताओं को 1200 से अधिक लाइसेंस और विदेशी निर्माताओं को 30 से अधिक लाइसेंस प्रदान किए हैं। सरकार के प्रयासों से भारतीय खिलौना उद्योग के लिए अधिक अनुकूल विनिर्माण परितंत्र बनाने में मदद मिली है। 2014 से 2020 तक 6 वर्षों की अवधि में सरकार के समर्पित प्रयासों से विनिर्माण इकाइयों की संख्या दोगुनी हो गई है, आयातित वस्तुओं पर निर्भरता 33 प्रतिशत से घटकर 12 प्रतिशत हो गई है। वर्तमान में एमएसएमई मंत्रालय 19 खिलौना उत्पादन केंद्रों की मदद कर रहा है, और वस्त्र मंत्रालय 13 खिलौना उत्पादन केंद्रों को खिलौनों का डिजाइनिंग तैयार करने और जरूरी साधन मुहैया कराने में मदद कर रहा है। स्वदेशी खिलौनों को बढ़ावा देने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रचार पहल भी की गई हैं, जिनमें दि इंडियन टॉय फेयर 2021, टॉयकैथॉन आदि शामिल हैं। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफ्टी) ने घटिया स्तर के खिलौनों के आयात पर अंकुश लगाने के लिए प्रत्येक आयात खेप का नमूना परीक्षण अनिवार्य कर दिया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2014-15 के बाद से लगातार वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट तक में सरकार ने खिलौना उद्योग के विकास के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन और समर्थन देने की रणनीतिक पहल की है। सरकार ने खिलौना उद्योग को देश के 24 प्रमुख सेक्टर में स्थान दिया है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि भारतीय खिलौनों को वैश्विक खिलौना बाजार में बड़ी भूमिका निभाने हेतु खिलौना उद्यमियों को प्रेरित किया गया है। निश्चित रूप से मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत सरकार की नीतिगत पहलों के साथ-साथ घरेलू निर्माताओं के प्रयासों से भारतीय खिलौना उद्योग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यद्यपि देश का खिलौना उद्योग तेजी से आगे बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी देश के खिलौना सेक्टर को चमकीली ऊंचाई देने के लिए खिलौना क्षेत्र के तहत एक लम्बे समय से चली आ रही कई बाधाओं को हटाया जाना जरूरी है।

संक्षिप्त समाचार

श्री 1008 मुनि सुब्रतनाथ भगवान का संपन्न हुआ जन्म, तप कल्याण महोत्सव व मस्तकाभिषेक

जबलपुर (विश्व परिवार)। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा प्रतिष्ठित अतिशयकारी श्री 1008 मुनि सुब्रत नाथ जी भगवान का अभिषेक पूजन- शांतिधारा मस्तकाभिषेक जय जय कारों से साथ संपन्न हुआ, पूज्य मुनि श्री विश्रांत सागर जी महाराज 24 क्षुल्लक ममहाराज गद् गद् भावों से प्रभु का अवलोकन किया शांति धारा के प्रथम कलश के पात्र बने महावीर प्रसाद वेद प्रकाश माचिस वाले दिल्ली द्वितीय कलश प्रद्यून कुमार ओमप्रकाश गजिया ने तथा तृतीय कलश वीरेश सेठ दमोह संयोजक कुंडलपुर तीर्थ क्षेत्र, चतुर्थ कलश शिशिर सिंघाई कटनी, जबलपुर वालों ने पंचम कलश शांति धारा अरविंद, शुभम जैन सुरेंद्र जैन, अभय, मुकेश संजय जैन आदि अनेकों महानुभावों से संपन्न हुआ। आभार/संयोजन- शुभम जैन संगीतकार ने किया। ब्र. जिनेश भैया, महेश भैया, नरेश भैया ने मंच संचालन किया सुबोध कामरेड संजय चौधरी ने अतिथियों का स्वागत किया। -**संजय जैन**

खरतर 1080-2080 का स्वर्णिम इतिहास, द लिगेसी ऑफ जिनेश्वर के ट्रेलर में दिखी जैन परंपरा: चुन्नीलाल पराग जैन

दुर्ग (विश्व परिवार)। एक लम्बे अंतराल के पश्चात भारतीय सिनेमा में जैन दर्शन एवं जैन सिद्धांतों को आधार बनाकर एक सुन्दर संयोजन में द लिगेसी ऑफ जिनेश्वर फ़िल्म जन मानस के बीच महावीर जयंती के उपलक्ष्य मे 19 अप्रैल को देश को समर्पित की गई। फिल्म के प्रदर्शन के बाद से ही जैन जनमानस के बीच प्रदर्शित हुई। उसके बाद से दर्शकों का उत्साह देखते ही बन रहा था। इस फ़िल्म का प्रस्तुतीकरण संवाद हर पात्रों का अभिनय का कोई तोड़ नहीं हे जिसने भी यह फिल्म देखी वह इसका दिवाना हो गया देखते ही देखते इस फिल्म के प्रति वातावरण बन गया। इस दौरान दावा किया गया कि यह फिल्म जैन धर्म की संस्कृति और अनछुए पहलुओं को सबके सामने मजबूती से रखरही हे। कई बाधाओं को पार करने के बाद आखिरकार फिल्म का ट्रेलर का लोकार्पण हुआ।अब यह फिल्म सिल्वर स्क्रीन पर धूम मचाकर एक नया कीर्तिमान हासिल कर रही है। वर्तमान खरतरगच्छाचार्य श्री जिन पीयूष सागर सूरीश्वर के आशीर्वाद से और खरतरगच्छाचार्य सहस्त्राब्दी महोत्सव समिति के सहयोग से निर्माता अभिषेक मालू ने दर्शकों से अच्छे सिनेमा के अनुभव का वादा किया था। जिसमे वह पूर्णत: खरे उतरे। द लिगेसी ऑफ जिनेश्वर जैन परंपरा की अनकही कहानी को उजागर करने का वादा करती है, जो भगवान महावीर की महत्वपूर्ण शिक्षाओं और तीर्थंकर की आध्यात्मिक विरासत पर प्रकाश डालती है। दर्शक राजा ऋषभ देव से भगवान महावीर तक की यात्रा के साथ-साथ खतरगच्छ (जैन धर्म में एक संप्रदाय) की स्थापना को एक दिलचस्प कथा प्रारूप में प्रस्तुत करते हुए देख रहे है। यह फिल्म जैन धर्म के सार को प्रामाणिकता और श्रद्धा के साथ जीवंत करती है। फ़िल्म में लिए हुए गीत बहुत प्रेरित करने वाले है। भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के महामंत्री चुन्नीलाल पराग जैन ने जैन समाज के सभी वर्ग संप्रदाय के लोगों से इस फिल्म को देखने का आह्वान किया है उन्होंने कहा आइए आप और हम मिलकर संकल्प लेकर इस फ़िल्म को समाज के हर व्यक्ति को दिखाने का प्रयास करे। फ़िल्म के माध्यम से खरतर के इतिहास को जन जन तक पहुचाने का कार्य करे। -**नवीन संचय**

मुनि पुगंव श्री सुधासागर महाराज कुलभूषण के साथ ही देश भूषण भी है : मुनि श्री विनम्रसागर जी महाराज

जिज्ञासा समाधान में मुनि श्री अजित सागरजी महाराज ने भी दिया सम्बोधन

महा महोत्सव के वाद कुंडलपुर से उप संघों के विहार काक्रम जारी : विजय धुर्रा

हिंडोरिया दमोह (विश्व परिवार)। गृहस्थ को कोई भी पीठ सहित मूर्ति आदि घर मे नही रखना चाहिए, हा काँच जड़ित फोटो रख सकते है। जो रखी है उनको गहरे पानी आदि में विसर्जित कर देना चाहिए जितने भी अकृत्रिम चीजे है तीर्थ भूमि पर जो स्वयं चौका लगाकर के आहार दान दे रहे है वे तब से पुण्य कमा रहे है जब से घर निकलकर तीर्थ क्षेत्र पर पहुंचे हैं तीर्थ क्षेत्र पर चौका लगाकर वे पात्रों को दान देने की भावना हर समय भा रहे हैं और जो तात्कालिक चौके में जा रहे है वह आपका व्यवहार है आगम से ऐसी कोई परम्परा नही की आप दूसरे के चौके में जा कर आहार दें फिर भी आपका ये व्यवहार चलता है चक्रवर्ती नौकरों के हाथ का भोजन करता है लेकिन जब चौका लगता है तब रानी ही स्वयं भोजन बनाती है, हा बाहर के कार्य की बात अलग है आज तो आपकी सरकार में बैठे लोग भी वेतन ले रहे हैं तो बाहरी कार्य आप किसी से भी करा सकते हैं उक्त आश्य के उद्गार मुनि पुगंव श्री सुधासागजी महाराज ने हिंडोरिया दमोह में जिज्ञासा समाधान समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मध्य प्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि निर्यापक श्रमण मुनि पुगंव श्री सुधासागजी महाराज मुनिश्री अजित सागरजी महाराज मुनिश्री विनम्रसागरजी महाराज ससंघ के सानिध्य में जिज्ञासा समाधान हिंडोरिया में हुआ कुंडलपुर तीर्थ क्षेत्र से मुनि संघ का विहार जारी है उप संघों का विहार विभिन्न नगरों के लिए चल रहा है जिज्ञासा समाधान के पहले सत्र में मुनि श्री विनम्र सागरजी महाराज ने कहा कि जिज्ञासा समाधान के माध्यम से आप अपनी शंका का समाधान स्वयं समाधान परम पूज्य निर्यातक श्रमण मुनि श्री सुधासागरजी महाराज के श्री मुख से प्राप्त कर सकते हैं।

जि. बसज्ञासा समाधान का संचालन करते हुए प्रखर वक्ता मुनि श्री विनम्र सागरजी महाराज ने कहा कि आज हिंडोरिया की पवित्र पावन भूमि पर वीच में मध्य में विराजमान मुनि पुगंव श्री सुधासागजी महाराज के दर्शन कर रहे हैं आप सभी उन्हें मुनि पुगंव कहते हैं लेकिन परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य भगवंत गुरु देव श्री विद्यासागर जी महाराज का चतुर्विधा संघ उन्हें क्या कहता है उसे मैं बताना चाहता हूं कुछ लोग कुल भूषण होते हैं कुल लोग देश भूषण होते हैं लेकिन कोई एक किन्तु कुलभूषण के साथ ही देश भूषण है उसे सुधासागर महाराज कहते हैं आपके हाथ का आशीर्वाद सभी मुनि राजो के साथ आर्यिका संघ पर भी आचार्य भगवंत की भांति वना हुआ है। मुनि श्री अजित सागर जी महाराज ने कहा कि महा महोत्सव के वाद सभी संतों का अपने अपने गंतव्य की ओर विहार हो रहा है आज आपको तीन तीन संघों का सानिध्य जिज्ञासा समाधान में मिल रहा है इस दौरान मुनि पुगंव श्री सुधासागजी महाराज ने कहा कि दुख मनाना, शोक करना, जोर जोर से रोना, दूसरे को दु:खी करना ये सब असाता वेदनीय कर्म के बंध के कारण है। अभी दु:ख कम है लेकिन व्यक्ति उसमे और अधिक दु:खी होता है तब ऐसे कर्म का बन्ध होगा कि उसे और दु:खी होना पड़ता है। -**विजय धुर्रा**

भगवान मुनि सुव्रतनाथ का जन्म और तप कल्याणक आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज के सानिध्य में मनाया गया

विदिशा (विश्व परिवार)। दूसरे की पीड़ा देखकर जो व्यक्ती पीड़ित न हो वह हमेशा बीमार बना रहता है, जिसके हृदय में पर पीड़ा को दूर करने के भाव होते है, वह कभी किसी रोग से ज्यादा पीड़ित नही रहता उपरोक्त उदगार आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज ने अरिहंत विहार जैन मंदिर प्रांगण में श्री विद्यासागर प्रवचन हाल मे प्रात:कालीन प्रवचनसभा मे व्यक्त किये उन्होंने उदाहरण देते हुये कहा कि एक ही घर में पैदा हुये बेटों मे एक बेटा हमेशा बीमार बना रहता है, वही दूसरी ओर दूसरा बेटा है जो स्वस्थ भी है और समर्द्ध भी है आखिर इसके पीछे कारण क्या है? उत्तर देते हुये उन्होंने कहा किसी की पीड़ा को देखकर जो व्यक्ति मुंह फेर कर निकल जाता है वह व्यक्ति बचपन से ही शरीरिक व्याधियों से पीड़ित रहता है? संसार मे जो बस्तु आप दूसरो को दे रहे हो वही बस्तु तो आपके पास रिटर्न आने बाली है आज जितना अधिक दोगे आपको उससे अधिक ही मिलेगा। उन्होंने दान की महिमा बताते हुये कहा कि दान अकेले धन का ही नही होता जिसके पास जो है उस बस्तु का दान करने से वह बस्तु चौगुनी गति से बड़ती है। आप लोगो के पास परिग्रह है, तो आप लोग उस परिग्रह का दान करते है, मुनिराज के पास ज्ञान है, तो वह उसका दान देते है, उन्होंने कहा कि ज्ञान और धन यहभी किस्मत और सौभाग्य से मिला करता है, आप अपनी किस्मत बनाइये, किस्मत महनत से नहीं बल्कि बुद्धि अर्थात ज्ञान से बनती है, यदि महनत से बनती होती तो एक बोरे ढोने बाला मजदूर एक प्रोफेसर या डाक्टर से ज्यादा कमा लेता उन्होंने सौभाग्य और भाग्य की चर्चा करते हुये कहा कि सबेरे उठकर भगवान का अभिषेक और पूजन करते है, तो सौभाग्यशाली और मात्र दर्शन करते है तो भाग्यशाली और जो आपके घर के पास मंदिर होने के पश्चात भी न तो अभिषेक पूजा करता और न ही दर्शन उससे अधिक दुर्भाग्य शाली व्यक्ती दूसरा नही आप चिरंजीवी हो और आपकी धर्मपत्नी सौभाग्यशाली उनके ही सौभाग्य से आप भगवान की अभिषेक पूजा तथा मुनिराज को आहारदान दे पाते हो उपरोक्त जानकारी देते हुये प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया प्रात:कालीन बेला में भगवान मुनिसुव्रतनाथ के जन्म तथा तप कल्याणक के शुभ अवसर पर किरीमोहल्ला स्थित श्री महावीर जिनालय मे भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा का मस्तकाभिषेक एवं शांतिधारा आचार्य श्री के मुखारविंद से संपन्न हुई इस अबसर पर संघस्थ सभी मुनिराज विराजमान थे। शांतिधारा उपरांत आचार्य श्री ने प्रवचन करते हुये कहा कि बिना दृव्य दान किये भगवान का अभिषेक नहीं करना चाहिये जरूरी नही कि दान बड़ा ही हो वह अपनी स्वेच्छा से गोलक में भी डाल सकते है।

-**अविनाश जैन**

अक्षय तृतीया पर्व पर होगी एटा गौरव विशू दीदी सहित 13 दीक्षार्थियों की मंगल गोद भराई

वैरागियों के वैराग्य की अनुमोदना से भरती हैं खाली झोलियां : आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

देहरा तिजारा/अलवर राजस्थान (विश्व परिवार)। आखा तीज (अक्षय तृतीया) के पावन पर्व पर अक्षय क्षेत्र देहरा तिजारा के बड़े बाबा 1008 श्री चंद्र प्रभु भगवान की चरण छाया में एवं भावलिंगी संत राष्ट्रीयोगी श्रमणाचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज के मंगल आशीर्वाद एवं पावन सानिध्य में गुरुदेव के ही संघस्थ 13 दीक्षार्थी शिष्यों का हो रहा है प्रथम गोद भराई का महा आयोजन। 10 मई 2024 शुक्रवार के पावन दिवस पर आगामी 15 नवंबर 2024 को होने वाली भगवती जिन दीक्षा को प्राप्त करने वाले भव्य आत्माओं की प्रथम गोद भराई के महा आयोजन में देश भर से हजारों श्रद्धालु भक्तगढ़ अतिशय क्षेत्र पर पधार कर भव्य दीक्षार्थियों की गोद भरकर उनके परम वैराग्य की अनुमोदना करेंगे।

क्या है गोद भराई का महत्व : जैन धर्म में जैन धर्म में दीक्षा लेने वाले भाव्यजीवो की दीक्षा से पूर्व दीक्षार्थी भव्य आत्माओं के वैराग्य की प्रशंसा एवं अनुमोदना के साथ ही आप जैसा उत्कृष्ट वैराग्य हमें भी प्राप्त हो इस पवित्र भावनाओं से भरकर श्रावक श्राविकाएं मांगलिक द्रव्यों से दीक्षार्थियों की गोद भरते हैं पूज्य आचार्य श्री इस अवसर की महत्वता को बताते हुए कहते हैं कि जो कोई मां भावपूर्वक दीक्षार्थियों के मंगल द्रव्यों से गोद बढ़ती है उनकी गोद कभी सुनी नहीं रहती।

कहां होगा दीक्षाओं का महा आयोजन कहां होगा विमर्श भक्तों का महाकुंभ : 15 नवंबर 2024 को परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज के पवित्र कर कमल से बाल ब्रह्मचारी विशू दीदी सहित 13 दीक्षार्थियों को भगवती जिन दीक्षा प्रदान की जाएगी लेकिन कहां यह निश्चित नहीं किया गया है देश की राजधानी दिल्ली प्रदेश की जैन समाज सहित बड़ोत जैन समाज, अतिश्य क्षेत्र तिजारा जैन समाज, अलवर जैन समाज तथा रेवाड़ी जैन समाज के श्रद्धालु भक्तगण आचार्य श्री के चरणों में बारंबार निवेदन कर रहे हैं कि इस वर्ष का चातुर्मास एवं दीक्षाओं का महाकुंभ हमारे नगर में संपन्न किया जाए पूज्य आचार्य श्री श्रुत पंचमी पर्व के पश्चात निश्चित करेंगे कि इस वर्ष का सौभाग्य किसी समाज को प्राप्त होगा।

कौन होंगे भगवती जिन दीक्षा प्राप्त करने वाले महापात्र : भावलिंगी संत आचार्य श्री से जिन दीक्षा प्राप्त करने वाले संघर्ष शिष्य शिष्याओं में सर्वप्रथम विमर्शनुरागनी बहन बाल ब्रह्मचारी विशू दीदी है जिन्होंने सिद्ध क्षेत्र आहार जी में भगवान शांतिनाथ एवं गुरुदेव आचार्य विमर्श सागर जी के आशीर्वाद से असाध्य रोग से मुक्त होकर नवजीवन प्राप्त किया था और अपनी गुरु भक्ति का अनुपम परिचय दिया था अगले क्रम में आचार्य गुरुवर की ग्रस्त जीवन की छोटी बहन बाल ब्रह्मचारी महिमा दीदी है आगे, बाल ब्रह्मचारी मेघा दीदी, बाल ब्रह्मचारी ज्योति दीदी, बाल ब्रह्मचारी सोनली दीदी, बाल ब्रह्मचारिणी सृष्टि दीदी, बाल ब्रह्मचारी रिया दीदी, ब्रह्मचारिणी गुंजन दीदी, बाल ब्रह्मचारी दीपा दीदी, ब्रह्मचारिणी रीता दीदी, बाल ब्रह्मचारी प्रतीक्षा दीदी, ब्रह्मचारिणी मित्रावती दीदी एवं ब्रह्मचारी प्रवीण भैया जी है इन 13 महापात्राओं को आगामी नवंबर माह में जिन दीक्षा प्रदान की जाएगी। इन्हीं 13 दीक्षार्थी की आगामी 10 मई को अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर आचार्य गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद पूर्वक गोद भराई की जाएगी।

जिन शासन का सबसे महत्वपूर्ण दिवस अक्षय तृतीया महापर्व : जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ स्वामी को तप धारण करने के पश्चात 13 महा बीत जाने पर राज सोम- श्रेयांश के राजमहल में प्रथम आहार की प्राप्ति हुई थी उसे दिन आहार सामग्री क्षय को प्राप्त नहीं हुई थी अत:दान तीर्थ प्रवर्तन के रूप में यह अक्षय तृतीया पर्व मनाया जाता है इस दिन सुधी श्रावक श्राविकाओं को अवश्य ही आहार दान करना चाहिए।

अतिशय क्षेत्र तिजारा पर 10 में को देश भर से पधारने वाले हजारों गुरुभक्तों को आहार दान एवं दीक्षार्थियों की अनुमोदना यह दोनों महान अवसर प्राप्त होंगे कोई भी पुण्य आत्मा इस पूर्ण कर से चूक नहीं सकता।

3 मई शुक्रवार को अतिशयक्षेत्र देहरा तिजारा जी के बड़े बाबा भगवान चंद्रप्रभु के दरबार में चंद्रप्रभु अर्चना की जाएगी। 10 मई को प्रात: वेला में जिनआराधना पश्चात अक्षय तृतीया पर्व मनाया जाएगा पश्चात चतुर्विधि संघ की आहारचार्य संपन्न होगी जिसमें हजारों श्रावक, श्राविकाएं आहार दान देकर महापुण्य अर्जन करेंगे मध्यान 1:00 से बाल ब्रह्मचारी विशू दीदी सहित 13 भव्य दीक्षार्थियों की मंगल गोद भराई की जाएगी स्थानीय जैन समाज सहित देशभर से आने वाले हजारों गुरु भक्तों को यह महान वैराग्य अनुमोदन का सुअवसर प्राप्त होगा। संध्या बेला में सुप्रसिद्ध गीतकार भजन सम्राट रूपेश जैन द्वारा गुरु चरणों में विमर्श स्वरांजलि समर्पित की जाएगी। -**विशु दीदी**

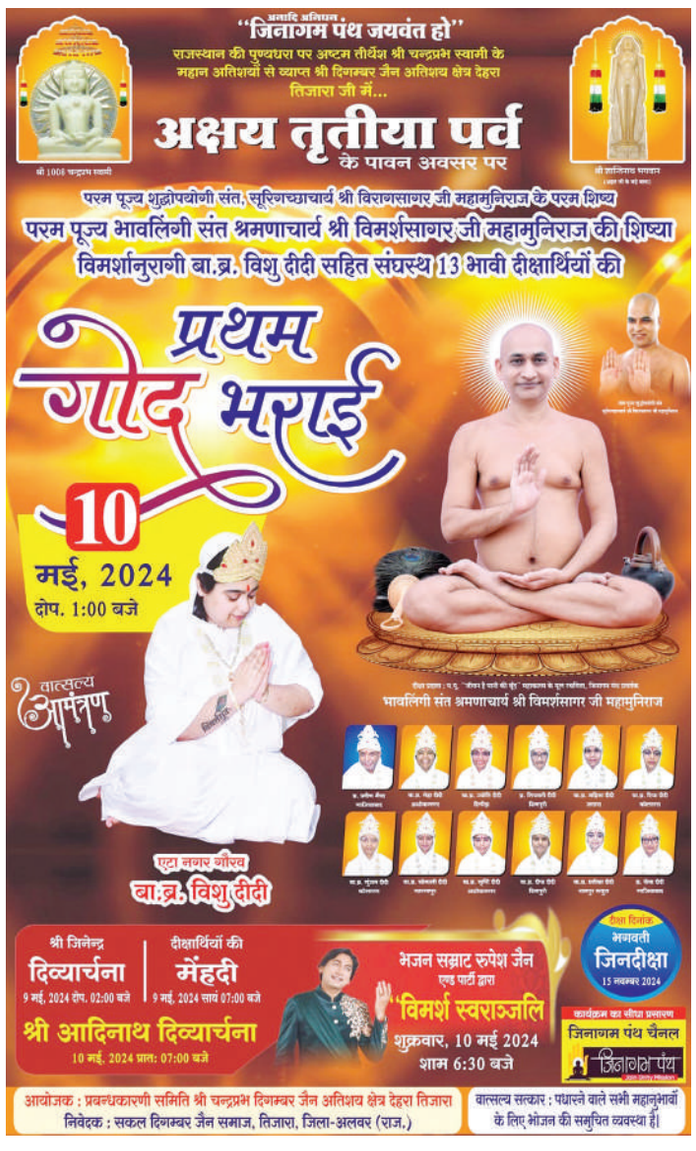

रेत माफिया के हौसले बुलंद, पत्रकार से की गई मारपीट

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। क्षेत्र की जीवनदायनी पैरी और महानदी के 8 अवैध घाट में 14 चेन माउंटेन से चौबीसों घंटे धड़ल्ले से रेत का अवैध उत्खनन व परिवहन हो रहा है। रेत माफियाओं के द्वारा नदियों की छाती को छलनी किया जा रहा है। प्रशासन का सुस्त रवैया व रेत माफियाओं की दबंगई के कारण अवैध उत्खनन पर रोक नहीं लग रहा है। क्षेत्र में हथखोज की एक खदान मात्र माइनिंग के लिए अधिकृत है लेकिन यहा पैरी के सिंधोरी, महानदी के पितईबंद, चौबेबांधा, परसदा जोशी में 9 से ज्यादा घाट बनाए गए हैं जहां 14 चेन माउंटेन मशीन लगाई गई है। इन मशीनों से रोजाना अवैध रेत खनन का अवैध कारोबार चल रहा है।

सुबह हुई कार्रवाई शाम को फिर से होने लगा अवैध उत्खनन : आरोप लगाया जा रहा है कि बुधवार को सुबह राजिम् एसडीएम रेड के लिए नदी घाट पर पहुंचे। कुछ गाड़ियों को पकड़ कर जब्ती भी बनाई लेकिन शाम होते ही फिर से वहीं खेल शुरू हो गया हैं। जो रातभर चलती रही। अंदरूनी इलाकों से होकर अंदर के गांव से हाईवा ड्राईवर रेत भरी हाईवा को निकाल रहे हैं जो कि कभी भी गंभीर दुर्घटना को अंजाम दे सकते हैं। रेत भरी हाईवा की वजह से आसपास के गांव में कई हादसे भी हो चुके हैं। लेकिन रेत माफियाओं को इससे कोई सरोकार नहीं।

कवरेज के लिए गए तो कर दी पत्रकार की पिटाई : सिंडीकेट ने अपनी करतूत ढंकने के लिए गुर्गे भी फैला रखा है। घाट के आने-जाने वाले रास्तों में कई नकाबपोश दिखेंगे। बीते 1 मई को सिंधोरी घाट में हो रहे अवैध निकासी का वीडियो बनाने पहुंचे राजिम के नागेंद्र निषाद की पिटाई कर दी गई, जिसका वीडियो भी वायरल हो रहा है। पीड़ित की शिकायत के बाद राजिम पुलिस ने मामले में तत्काल कार्रवाई करते हुए मारपीट का मामल दर्ज किया है। नागेंद्र ने बताया की आज 5 मोबाइल पर कॉल आया था, कॉलर ने उसे कहा कि वह एसपी ऑफिस से बात कर रहा है और जिसके खिलाफ शिकायत किया गया था वो लोग अब तुम्हारे खिलाफ एट्रोसिटी लगा रहे हैं हालाकि, कॉलर के बोलने के तरीके से नागेंद्र भी समझ गया है की उसे डराया जा रहा है।

रोजाना 400 से 500 ट्रिप हाईवा अवैध रुप से निकाला जा रहा : रेत माफिया रेत का अवैध रूप से उत्खनन कर रायपुर दुर्ग भिलाई जैसे महानगरों तक बगैर किसी वैध दस्तावेज के ले जा रहे हैं। इसके एवज में खदान संचालक 4500 से लेकर 7800 रुपए तक वसूल रहे है। रोजाना 400 से 500 ट्रिप हाइवा रेत निकाला जा रहा है। रेत के सफेद कारोबार से रेत माफिया मालामाल हो रहे हैं वहीं नदियों को खोखला किया जा रहा है, रेत से ही नदियों का वजूद है अगर यही हाल रहा तो भविष्य में भूगर्भीय आपदा आने की आशंका बनी हुई है।

विधायक ने दिए रेत माफियाओं पर सख्त कार्रवाई के निर्देश

नवापारा/राजिम (विश्व परिवार)। विधानसभा क्षेत्र में चल रहे अवैध रेत उत्खनन को लेकर विधायक रोहित साहू ने अंकुश लगाने के निर्देश गुरुवार को कलेक्टर को दिए हैं। विधायक ने प्रशासन को फटकार लगाते हुए कहा है कि उनके विधानसभा क्षेत्र में एक भी अवैध रेत उत्खनन नहीं होना चाहिये। वहीं रेत उत्खनन में जो गुंडागर्दी चल रही हैं, उस पर अंकुश लगे। साथ ही इस मामले में कठोर कार्रवाई के निर्देश प्रशासन को दिए हैं। उन्होंने जिले के खनिज अधिकारी को दो टूक कहा कि किसी भी हाल में चेन माउंटिंग से रेत का अवैध उत्खनन का कार्य बर्दास्त नहीं किया जाएगा क्योंकि कहा कुछ लोग सरकार की छवि को धूमिल करने का प्रयास कर रहे हैं। तत्काल छापा मारकर कार्रवाई करें।

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 69 दिनांक 03.05.2024
वार्ड का नाम- ठाकुर प्यारेलाल वार्ड
वार्ड क्र. 11 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **11** मांग **पंजी क्र. 775 युआईडी 36773** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **संजय कुमार शर्मा / हरिनंदन शर्मा** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **रन्नू गुप्ता / अमित गुप्ता** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **03-06-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 68 दिनांक 03.05.2024
वार्ड का नाम- सुन्दर लाल शर्मा वार्ड
वार्ड क्र. 20 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **20** मांग **पंजी क्र. 348 युआईडी 22237** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **अदिति अगरवाल / ललित अगरवाल** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **पौराणिक कुमार साहू / कलि राम साहू** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **03-06-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 67 दिनांक 03.05.2024
वार्ड का नाम- डॉ. राधाकृष्णन वार्ड
वार्ड क्र. 22 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **22** मांग **पंजी क्र. 1 युआईडी 23155** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **धर्मेन्द्र निराला / बेदराम निराला** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **1. कमलेश रात्रे / राजू रात्रे 2. जयप्रकाश रात्रे / राजू रात्रे** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **03-06-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 72 दिनांक 03.05.2024
वार्ड का नाम- माधव राव सप्रे वार्ड
वार्ड क्र. 19 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **19** मांग **पंजी क्र. 413 युआईडी 21710** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **मो. जावेद / अ. अफ्फार** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **अरिहंत बैद / कमल सिंग वैद** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **03-06-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शनिवार 04 मई 2024

संक्षिप्त समाचार

युवक पर चाकू से हमला करने वाला आरोपी गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले के कोतवाली पुलिस के टीम ने युवक पर चाकू से प्राणघातक हमला करने वाला आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से बटनदार चाकू जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार पीड़ित का आरोपी के शादीशुदा बहन के साथ प्रेम प्रसंग था, जिसको पीड़ित पहले अपने साथ भगा कर ले गया था। कुछ दिन बाद वापस आने के बाद आरोपी के परिजन उनको ससुराल भेज दिये थे। पीड़ित द्वारा प्रेम प्रसंग के चलते आरोपी के बहन के नाम के लिखवाये गोदना को मोहल्ले के लोगों को दिखाता था। जिससे आरोपीगणों को शर्मिंदगी महसूस होता था। उसी बात के गुस्से एवं पुराने रंजिश को लेकर कल आरोपी अजय सिन्हा 23 वर्ष निवासी सुंदरगंज वार्ड सिहावा के द्वारा प्रार्थी को देखकर धारदार स्प्रिंगदार चाकू से हत्या करने के नियत से प्राणघातक वार कर प्रार्थी के बांये पीठ, दाहिने सिर, दाहिने कोहनी व बांये हाथ के अंगूली में मारकर गंभीर चोट पहुंचाया है। प्रार्थी को परिजन लोग इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती किया है। वहीं पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

डीएसपी चन्द्रा ने मार्ग में बैठे रहने वाले अवारा मवेशियों को पकड़कर भेजा कांजी हाउस

धमतरी(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक धमतरी श्री आंजेनय वार्ष्णेय के निर्देशन पर यातायात उप पुलिस अधीक्षक श्री मंणीशंकर चन्द्रा के द्वारा शहर के मार्ग में बैठे व घुमने वाले अवारा मवेशियों के जमघट से होने वाले परेशानी व जाम को दूर करने, मवेशी मुक्त मार्ग, निर्बाध व दुर्घटनारहित मार्ग बनाने के उद्देश्य से हमराह स्टॉफ के साथ नगरपालिक निगम के काउ कैचर टीम से समन्वय कर शहर के मार्ग में बैठे व घुमने वाले अवारा मवेशियों का धरपकड़ अभियान चलाया जा रहा है। इसी दौरान दिनांक 01.05.2024 के रात्रि में उप पुलिस अधीक्षक यातायात श्री मणीशंकर चन्द्रा के द्वारा यातायात स्टॉफ एवं नगर निगम काउ कैचर टीम के साथ शहर के अर्जुनी मोंड़ से रत्नाबांधा तक कुल 20 अवारा मवेशियों को पकड़कर कांजी हाउस भिजवाया गया। यातायात पुलिस मवेशी मालिकों से अपील करती है, कि अपने मवेशियों को खुला न छोंड़े, मवेशी के मार्ग में होने से जन एवं पशुधन हानि होती है तथा यातायात बाधित रहती है। यातायात व्यवस्था बनाने में यातायात पुलिस का सहयोग करें। उक्त कार्यवाही के दौरान यातायात स्टॉफ उनि.के.आर.साहू, प्रआर. उत्तम साहू, चालक आरक्षक संतोष ठाकुर एवं नगर निगम काउ कैचर टीम से चम्पेश्वर चंदेल, गोविंद एवं श्यामू उपस्थित रहे।

शादी का झांसा देकर नाबालिक से बलात्कार आरोपी गिरफ्तार

कोरिया(विश्व परिवार)। एक नाबालिक लड़की को शादी का प्रलोभन देकर उसके साथ लगातार दुष्कर्म करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार पीड़ित लड़की ने 30 अप्रेल को थाने में शिकायत दर्ज कराई थी कि माह अगस्त 2023 में नावापारा गांव के बागर सिंह के नाती के अन्प्राशन कार्यक्रम में अपने चाची तथा महराजपुरहीन दीदी के साथ में गई थी। जहां इसकी मुलाकात आरोपी छबीलाल से हुई और तभी से दोनो में दोस्ती हो गई। इसके बाद आरोपी ने छबिलाल ने पीड़ित से यह कहकर कि, मैं तुम्हे पसंद करता हूं और तुमसे शादी करना चाहता उसके साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाये। जिससे नाबालिक पीड़िता गर्भवती हो गई। जिसके बाद आरोपी ने शादी करने से इंकार करर दिया। जिसपर पीड़िता ने थाने में शिकायत दर्ज करवाई। प्रार्थिया के रिपोर्ट पर आरोपी के विरूद्ध अपराध कायम कर विवेचना में लिया गया।

कुकड़ाझोर में किया गया नि:शुल्क मेडिकल कैम्प का आयोजन

नारायणपुर(विश्व परिवार)। 53वीं वाहिनी आईटीबीपी जेलवाडी, नारायणपुर के द्वारा 30 अप्रैल को सीओबी कुकड़ाझोर में अमित भाटी कमांडेट 53वी वाहिनी भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल के कुशल मार्ग दर्शन में एवं जिला चिकित्सालय, नारायणपुर के सहयोग से डॉक्टर सपना के नेतृत्व में निशुल्क मेडिकल कैम्प का आयोजन किया गया व सीओबी के नजदीक गाँव की महिलाओं एवं बच्चों की चिकित्सा जाँच कर जरूरी दवाईयों का वितरण किया गया। महिलाओं को मुख्यत: होने वाली बीमारीयों के प्रति जागरूक किया गया तथा भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं के बारे में अवगत कराया गया।

बिरहोर आदिवासियों के बीच पहुंचे कलेक्टर

मांदर की थाप पर कलेक्टर और बिरहोर आदिवासियों ने मनाया मतदाता जागरूकता का उत्सव

कलेक्टर ने दिलाई मतदाता शपथ, वोटरों का किया सम्मान

बिलासपुर(विश्व परिवार)। लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व में शामिल होने शहरों में नहीं अपितु सूदूर वनांचलों में भी लोगों में उत्साह देखा जा रहा है। शत प्रतिशत मतदान बिलासपुर का अभिमान कार्यक्रम में लोगों द्वारा बढ़-चढ़कर भागीदारी निभायी जा रही है। इसी क्रम में आज कोटा ब्लॉक के सुदूर गांव उमरिया दादर में बिरहोर जनजाति द्वारा पारंपरिक लोकनृत्य के जरिए मतदाता जागरूकता का संदेश दिया गया। मांदर की थाप पर सधे कदमों द्वारा किए जा रहे नृत्य ने लोगों का मन मोह लिया। इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत एवं स्वीप के नोडल अधिकारी श्री आर. पी. चौहान,बिरहोर समाज के मसीहा कहलाने वाले पदमश्री श्री जागेश्वर यादव, बिरहोर समाज प्रमुख श्री आनंद राम बिरहोर, श्री बुधराम बिरहोर, बैगा समाज प्रमुख श्री मिलन सिंह बैगा, श्री राम सिंह बैगा, जिला पंचायत के परियोजना अधिकारी श्री ओम पांडे, जनपद सीईओ श्री युवराज सिन्हा सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी भी मौजूद थे। कार्यक्रम में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अवनीश शरण ने सभी को छत्तीसगढ़ी में मतदाता शपथ दिलाई। उन्होंने वरिष्ठ मतदाता, दिव्यांग मतदाता, नए मतदाता और नववधू बिरहोर वोटरों का सम्मान करते हुए 7 मई को सभी से मतदान करने की अपील की। कार्यक्रम में कलेक्टर ने भी बिरहोर आदिवासियों के साथ मांदर बजाया। उन्होंने मतदाता जागरूकता संदेश के गुब्बारे भीआसमान में छोड़े। कार्यक्रम में 22 पंचायतों से पहुंचे बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के लोगों का उत्साह देखते ही बन रहा था। महिला-पुरूषों द्वारा संयुक्त रूप से किए गए नृत्य ने समा बांध दिया। पंचायत भवन के पास कार्यक्रम स्थल को पूरी तरह से जनजातीय परिवेश में सजाया गया था। उल्लेखनीय है कि कोटा जनपद पंचायत में बिरहोर जनजाति के 104 परिवार के 336 सदस्य निवासरत हैं। बिरहोर जनजाति का यह नृत्य लोगों की बीच एकजुटता की भावना पैदा करता है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अवनीश शरण को अपने बीच पाकर उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने अपने पारंपरिक रीति रिवाजों से खुमरी एवं महुए के हार से कलेक्टर एवं अन्य अतिथियों का स्वागत किया। इसके साथ ही उन्होंने बांस से बने कई सामग्री भी कलेक्टर को भेंट में दी। कलेक्टर ने इस अवसर पर कहा कि सुदूर वनांचल में मतदाता जागरूकता के लिए यह कार्यक्रम हो रहा है, यह सुखद क्षण हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी को मतदान कर अपना फर्ज निभाना है। मतदान केंद्र में आना आपकी जिम्मेदारी है और मतदान अच्छे से करवाना हमारी अर्थात प्रशासन की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि मतदान केंद्र में भीषण गर्मी को देखते हुए मतदाताओं की सुविधा का पूरा ध्यान रखा जाएगा। कलेक्टर ने सभी से अनिवार्य रूप से मतदान की अपील की। कलेक्टर ने सभी को मतदाता शपथ दिलाई। सभी को मतदान करने और कराने के लिए प्रेरित किया। सीईओ जिला पंचायत श्री आर. पी. चौहान ने कहा कि मतदान हमारा अधिकार ही नहीं है यह हमारा कर्तव्य भी है। आज आप लोगो का जो उत्साह देखने को मिल रहा है ऐसा ही उत्साह 07 मई मतदान के दिन तक बनाए।

समान कार्य का समान वेतन पाना श्रमिक का अधिकार - जिला न्यायाधीश कोरबा

कोरबा(विश्व परिवार)। 01 मई 2024 को अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस के अवसर पर डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ताप विद्युत कंपनी कोरबा में श्रमिकों के कल्याणकारी योजनाओं के जानकारी दिये जाने के प्रयोजनार्थ विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री सत्येन्द्र कुमार साहू, जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोरबा के द्वारा अपने उद्बोधन में कहा गया कि जो भी व्यक्ति संस्थान, विभाग एवं अन्य जगह कार्य करते है, सभी श्रमिक है, कोई शारीरिक मेहनत करता है तो कोई बौद्धिक (दिमागी) मेहनत करता है, इसलिये हम भी अलग नहीं हैं। माननीय उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय को सभी व्यक्तियों के अधिकारों की चिन्ता रहती है, किसी भी व्यक्ति के अधिकार का हनन न हो, उसके लिये प्रत्येक विशेष दिवस पर उन्हें कानूनी रूप से जागरूक करने के लिये विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जाता रहता है। यहाँ आने का मुख्य उद्देश्य यदि है कि हम श्रमिकों को उनके अधिकार के संबंध में बता सकें । कानून के समक्ष पुरूष महिला को समान कार्य के लिये समान वेतन का अधिकार दिया गया है। साथ ही बाल मजदूरीध्निषेध अधिनियम 1986 के अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र के किसी बच्चे को किसी कारखाने, दुकानों इत्यादि जगहों पर काम में नहीं लगाने अथवा अन्य किसी जोखिमपूर्ण रोजगार में नियुक्त करने का प्रावधान के बारे में बताया गया। श्रीमती गरिमा शर्मा के द्वारा अपने उद्बोधन में कहा गया कि वे अपर जिला एवं सत्र न्यायालय के साथ - साथ श्रम न्यायालय के भी कार्य देखती है, इसलिये श्रमिकों से उनका दिल से जुड़ाव है, माननीय उच्च न्यायालय द्वारा उन्हें श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिये नियुक्त किया गया है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में पहले 18 वें शताब्दी में श्रमिकों को 16 से 18 घंटे कार्य करवाया जाता था। कभी-कभी उन्हें किसी दिन का मजदूरी भी नहीं दिया जाता था, श्रमिकों के द्वारा एक फेल्टू यूनियन बनाया गया उनके प्रयास से आगे जाकर 8 घंटे का काम करना निर्धारित किया गया तथा अतिरिक्त कार्य का अतिरिक्त भुगतान करने का प्रावधान शुरू करवाया गया। कंपनी की जिम्मेदारी होती है कि कार्य करने वाले श्रमिक को मौलिक मूलभूत सुविधाएं जैसे साफ-सफाई, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की सुविधा उपलब्ध कराया जावें। कार्य के दौरान यदि किसी भी प्रकार की जनहानिध्क्षति होती है या सुरक्षा उपकरण ना दिया जाकर कार्य करवाने के दौरान क्षति होती है तो श्रमिक को मुआवजा देना संबंधित कंपनी की जिम्मेदारी है।

मतदान केन्द्रों का अधिकारियों ने किया निरीक्षण, आवश्यक दिशा-निर्देश दिए

जांजगीर-चांपा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री आकाश छिकारा के निर्देशन में जिले के मतदान केन्द्रों में जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा सतत रूप से निरीक्षण किया जा रहा है और इस दौरान केन्द्रों में बिजली, पानी, छाया, बैठक व्यवस्था सहित अन्य मूलभूत सुविधाओं की जानकारी ली और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। गुरूवार को अपर कलेक्टर श्रीमती लवीना पांडेय, एसडीएम श्री वहीदुर्राहमान शाह सहित संबंधित अधिकारियों ने विभिन्न मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। अपर कलेक्टर ने अकलतरा के विभिन्न मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्वीप गतिविधियों की प्रभावी संचालन के संबंध में अकलतरा में सचिवों की बैठक ली। उन्होंने अमोरा के मतदान केन्द्र में वेब कास्टिंग कैम का इंस्टालेशन कार्य की स्थिति की जानकारी ली एवं शेष को जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। एस डी एम पामगढ श्री वहीदुर्राहमान शाह द्वारा एक ही परिसर मे तीन से अधिक मतदान केंद्रों वाले ग्राम पंचायत गोधना, केरा, सलखन, कुरियारी का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसके साथ संबंधित अधिकारियों द्वारा मतदाता पर्ची वितरण का निरीक्षण भी किया गया। अधिकारियों द्वारा घर-घर जाकर मतदाताओं को दी जा रही मतदाता पर्ची का वितरण की जानकारी लेते हुए शत प्रतिशत मतदान करने की शपथ भी दिला रहें है।

तेंदूपत्ता तोड़ने गए दो ग्रामीण भालू के हमले से घायल

गरियाबंद(विश्व परिवार)। गुरुवार सुबह जिला मुख्यालय से लगे ग्राम घुटकूनवापारा और ग्राम बेहराबुढ़ा तेंदूपत्ता तोड़ने गए ग्रामीणों पर जंगली भालू ने हमला कर दिया।भालू के हमले के दो लोग घायल हो गए है।जिसे जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है। जानकारी के मुताबिक पहली घटना ग्राम घुटकूनवापारा की।सुबह करीब 6 बजे तेंदूपत्ता तोड़ने जंगल गए सुदर्शन साहू पिता घासीराम साहू पर अचानक भालू ने पीछे से हमला का दिया।।इस दौरान उनकी पत्नी भी साथ थी। चीख पुकार मची तो भालू वहां से भाग निकला। हमले में सुदर्शन के पीछे कमर में सुर चोट लगी है।दूसरी घटना वहां से महज तीन किमी दूर ग्राम बेहराबुढ़ा की है। यहां पहाड़ी क्षेत्र में तेंदूपत्ता तोड़ने गए विराज ध्रुव पिता श्याम लाल ध्रुव भालू के हमले में घायल हो गया। विराज के सिर में गंभीर चोट लगी है।उसके साथ गए ग्रामीणों ने भालू के हमले से विराज को बचाया। जिसके बाद सरपंच मनीष ध्रुव ने उसे अस्पताल पहुंचाया।घटना के बाद दोनों ग्रामीणों का जिला अस्पताल में उपचार जारी है। इस संबंध सरपंच मनीष ध्रुव ने कहा कि तेंदूपत्ता तोड़ने को लेकर ग्रामीणों में उत्साह है।

डीआईजी डीआर आचला के सेवानिवृत होने पर दी गई विदाई

उनके कार्यों, व्यवहार एवं उपलब्धियों की सभी ने की सराहना

बालोद(विश्व परिवार)। पुलिस उप महानिरीक्षक एवं छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल 14वीं वाहिनी धनोरा बालोद के सेनानी डीआर आचला के 30 अप्रैल को अर्द्धवार्षिकी आयु पूरा करने के पश्चात् बुधवार 01 मई को 14वीं वाहिनी धनोरा के परिसर में आयोजित विदाई समारोह में उन्हें विदाई दी गई। इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने आचला के शून्य से शिखर तक के यात्रा की प्रसंशा करते हुए उनके कार्यों, व्यवहार एवं उपलब्धियों की भूरी-भूरी सराहना की। उल्लेखनीय है कि आचला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चैकी के सुदूर वनांचल एवं उस जमाने के अत्यंत दूर्गम एवं सुविधाविहीन ग्राम टोहे के मूल निवासी है। उन्होंने घोर गरीबी एवं अपने पिता के निधन हो जाने के कारण केवल 8वीं कक्षा की पढ़ाई नियमित विद्यार्थी के रूप में की है। इसके पश्चात् वे तमाम अभाव से संघर्ष करते हुए एक स्वाध्यायी छात्र के रूप में आगे की पढ़ाई की है। वे हायर सेकण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् 1988 में सहायक शिक्षक के पद पर मानपुर विकासखण्ड के रूप में नियुक्त हुए थे। आचला बचपने से ही अत्यंत मेधावी एवं कुशाग्र बुद्धि के थे। वे 1992 में मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग के माध्यम से डीएसपी के पद पर चयनित होकर कई जिलों के एडिसनल् एसपी, एसपी फिर डीआईजी के पद पर पदोन्नत हुए हैं। आचला की पहचान एक सफल पुलिस अधिकारी के अलावा अत्यंत मिलनसार, मृदुभाषी, संवेदनशील एवं कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी के रूप में है। वे जरूरमंद लोगों की मदद के लिए तैयार रहने के कारण अपने कर्म क्षेत्रों तथा चिर परिचत के लोगों के बीच बहुत ही लोकप्रिय है। विदाई समारोह में उप पुलिस महानिरीक्षक कांकेर शंकर बघेल, छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल 8वीं वाहिनी राजनांदगांव के सेनानी बीपीएस राजभानू, पुलिस अधीक्षक एंटी करप्शन ब्यूरो गोवर्धन ठाकुर एवं तिलकराम कोसमा, सेनानी छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल करकाभाट बालोद एसआर सलाम, पुलिस अधीक्षक बालोद सूरजन राम भगत, मुख्य अभियंता लोक निर्माण विभाग जीएस मण्डावी, एडीशनल एसपी बालोद अशोक जोशी, छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल 14वीं वाहिनी धनोरा बालोद के उप सेनानी डॉ. संगीता माहिलकर, जनसंपर्क अधिकारी बालोद चंद्रेश ठाकुर, सहायक खाद्य अधिकारी धरमू किरंगे सहित अन्य अधिकारी एवं गणमान्य गण उपस्थित थे।

शहर में व्यवस्थित ट्रैफ़िक के साथ नागरिकों की सुविधा सर्वोच्च प्राथमिकता : कलेक्टर

प्रशासन ने व्यापारियों की सहमति से एसबीआई चौक से चाँदनी चौक मार्ग को किया वन-वे

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर विजय दयाराम के. ने कहा कि जगदलपुर शहर धीरे-धीरे बड़े नगर का स्वरूप ले रहा है, इसके साथ ही शहर में वाहनों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में शहर के व्यवस्थित ट्रैफ़िक व्यवस्था बनाने के साथ नागरिकों की सुविधाओं को पूरा करना प्रशासन का प्रयास है। इसी व्यवस्था के तहत व्यापारियों के सहयोग और समर्थन से जगदलपुर शहर के एसबीआई चौक से चाँदनी चौक मार्ग को वन-वे किया जा रहा है। यह मार्ग एसबीआई चौक से शराब दुकान तक आने वालों के लिए एकांकी किया गया है। जबकि एसबीआई चौक आने वालों के लिए चाँदनी चौक से महावीर चौक होते जाने के लिए चिन्हांकित किया गया है। चांदनी चौक के सभी मार्ग को आने जाने के लिए खुला रखा गया है। कलेक्टर ने शहर की सुव्यवस्थित ट्रैफिक की व्यवस्था बनाएं रखने और वन-वे मार्ग निर्धारित करने के संबंध में चेम्बर ऑफ कॉमर्स, विभिन्न व्यापारी संघों के प्रतिनिधियों से जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में चर्चा किए। एकांकी मार्ग की व्यवस्था 3 मई के सुबह 7 बजे से प्रारंभ हो जाएगी। कलेक्टर ने बताया कि एसबीआई चौक से शराब दूकान तक आने वालों के लिए एकांकी कर ट्राफ़िक व्यवस्था को सुधार करने का एक प्रयोग किया जा रहा है। इसमें सफलता मिलने पर अन्य चौक-चौराहों में भी ट्राफ़िक व्यवस्था सुधारने का कार्ययोजना बनाया जाएगा।

घर आजा संगी संदेश से घर लौट आए मतदाता

सारंगढ़ बिलाईगढ़,(विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी धर्मेश कुमार साहू द्वारा स्वयं और उनके नेतृत्व में जिला प्रशासन द्वारा किए गए कॉलिंग, वीडियो कॉलिंग के निमंत्रण पर सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले के मतदाता ने सुंदर जवाबी प्रतिक्रिया में घर लौटना प्रारंभ कर दिया है। जिले के कई गांवों में ऐसे मतदाता लौट रहे हैं। ऐसे ही सारंगढ़ विकासखंड के ग्राम गंजईभौना में पति-पत्नी के लौटने पर जिला प्रशासन द्वारा उनका स्वागत ढोलक मंजीरा बजाकर और फूल-माला तिलक लगाकर किया गया। यह हर्ष का विषय है कि लोकतंत्र के पर्व और देश के गर्व में शामिल होने के लिए जिले के नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए निष्ठापूर्वक और गरिमापूर्ण समय अवधि में लौट रहे हैं। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी धर्मेश कुमार साहू ने जिले के ऐसे सभी मतदाताओं को जो रोजगार की तलाश में या अन्य किसी कारणवश बाहर निवास कर रहे हैं। 7 मई तक अपने घर लौट आने और मतदान करने के लिए अपील किया है। कलेक्टर ने आगे कहा है कि ऐसे मतदाता जो जून-जुलाई में खेती किसानी के समय लौटकर आते हैं वो इस साल लोकतंत्र के लिए समय पर मतदान के लिए 7 मई तक लौटकर आ जाएं।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शनिवार 04 मई 2024

व्यापार समाचार

अमेरिकन एक्सप्रेस गुरुग्राम में वैश्विक स्तर पर अपना सबसे बड़ा कार्यालय खोलेगा

गुरुग्राम(एजेंसी)। अमेरिकन एक्सप्रेस गुरुग्राम में एक नया, अत्याधुनिक परिसर खोलने जा रहा है। लगभग दस लाख वर्ग फुट में फैली यह सुविधा कंपनी द्वारा वैश्विक स्तर पर बनाया गया सबसे बड़ा कार्यालय है। यह अत्याधुनिक डिजाइन, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और कर्मचारी कल्याण को प्राथमिकता देता है। गुरुग्राम के सेक्टर 74ए में स्थित परिसर, एलईईडी गोल्ड प्रमाणन का दावा करता है, जो टिकाऊपन के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ऊर्जा-कुशल एलईडी लाइटिंग से लेकर स्मार्ट बिल्डिंग सिस्टम और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों तक, अमेरिकन एक्सप्रेस परिसर में पर्यावरण पदचिह्न को कम कर रहा है। अमेरिकन एक्सप्रेस, भारत के सीईओ और कंट्री मैनेजर, संजय खन्ना ने कहा, भारत में अमेरिकन एक्सप्रेस हमारी वैश्विक विशेषज्ञता और स्थानीय प्रतिभा का लाभ उठाकर दुनिया भर में ग्राहकों के लिए नए अवसरों और नवाचार को बढ़ावा देकर देश में क्षमताओं का विकास जारी रखे हुए है। नया कार्यालय भवन एक आधुनिक, ऊर्जा कुशल कार्यस्थल प्रदान करता है, जो हमारी टीमों को नवाचार जारी रखने और दुनिया भर में हमारे ग्राहकों को असाधारण मूल्य प्रदान करने में सक्षम बनाएगा। अमेरिकन एक्सप्रेस के ग्लोबल रियल एस्टेट एवं कार्यस्थल अनुभव के वरिष्ठ उपाध्यक्ष गगनदीप सिंह ने कहा, हमारा नया भारत परिसर वैश्विक स्तर पर हमारे द्वारा बनाया गया सबसे बड़ा कार्यालय है, और यह सुविधा अमेरिकन एक्सप्रेस ब्रांड और उस तरह के कार्यस्थल का एक उपयुक्त प्रतिबिंब है, जहां हमारे सहयोगी आगे बढ़ सकते हैं। इसमें नवीनतम डिजाइन, टिकाऊपन और प्रौद्योगिकी में प्रगति शामिल है। यह परिसर विश्वस्तरीय सुविधाओं के हमारे पोर्टफोलियो में शामिल है और हमें गर्व है कि इसने डिजाइन और भवन मानकों के कारण एलईईडी गोल्ड प्रमाणन हासिल किया है। कर्मचारियों की भलाई को मूल में रखकर डिजाइन की गई नई सुविधा में विशाल हरे-भरे स्थान, आकर्षक सामान्य क्षेत्र और आधुनिक एर्गोनोमिक वर्कस्टेशन शामिल हैं। शांत कमरे, मनोरंजक क्षेत्र और साइट पर स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं सहकर्मियों को आराम और खुशहाली प्रदान करती हैं। परिसर विभिन्न प्रकार की सुविधाएं प्रदान करता है, जिसमें लाइव कुकिंग स्टेशन के साथ एक कैफेटेरिया, एक फिटनेस सेंटर, खेल कोर्ट और अवकाश क्षेत्र शामिल हैं। इसके अलावा, उपयोगकर्ता-अनुकूल ऐप्स परिसर की सभी सुविधाओं तक निर्बाध पहुंच प्रदान करते हैं। यह नया कार्यक्षेत्र पूरे परिसर में और दुनिया भर के सहकर्मियों के साथ सहज संचार के लिए उन्नत तकनीक को शामिल कर सहयोग को बढ़ावा देता है। इस अत्याधुनिक सुविधा में अमेरिकन एक्सप्रेस का निवेश कंपनी के भारतीय कार्यबल के प्रति समर्पण और देश के भविष्य के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

सैमसंग ने भारत में 2024 नियो क्यूएलईडी औरओएलईडी एआई टेलीविजन के लॉन्च के साथ टीवी बिजनेस से 10,000 करोड़ रुपये की बिक्री हासिल करने का लक्ष्य तय किया

गुरुग्राम। भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्सब्रांड सैमसंग ने एआई टेलीविजन के अपने 2024 लाइनअप के लॉन्च के साथभारत में अपने टेलीविजन कारोबार से 10,000 करोड़ रुपये की बिक्रीहासिल करने का लक्ष्य तय किया है। विश्लेषकों के मुताबिक, भारत में अबतक किसी भी टेलीविजन ब्रांड ने यह उपलब्धि हासिल नहीं की है। सैमसंग इंडिया के विजुअल डिस्प्ले बिजनेस के सीनियर वाइस प्रेसीडेंटमोहनदीप सिंह ने कहा एआई-पावर्ड 8च नियो क्यूएलईडीS, 4K नियोक्यूएलईडीS और ओएलईडी टीवी की नई रेंज के लॉन्च के साथ, हमें इससाल भारत में अपने रेवेन्यू और मार्केट लीडरशिप को बढ़ाने का पूरी उम्मीद है। 2024 में, हमने भारत में अपने टीवी कारोबार से 10,000 करोड़ रुपये कारेवेन्यू हासिल करने का लक्ष?य तय किया है। हमारे नियो क्यूएलईडी 8K एआई टीवी जीवंत तस्वीरों और शानदार प्रीमियम ऑडियो के साथ दर्शकोंको टीवी देखने का जबरदस्त अनुभव प्रदान करते हैं।

एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने अपने व्यापारी पार्टनर्स के लिए बिज़नेस सॉल्यूशंस संग्रह पेश किया

रायपुर। आज एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने अपना बिज़नेस सॉल्यूशन संग्रह लॉन्च किया जो देश में इसके व्यापारी पार्टनर्स के बैंकिंग एवं पेमेंट के अनुभव में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए डिज़ाईन किया गया है इस इनोवेटिव संग्रह द्वारा एक ही यूनिफाईड प्लेटफॉर्म में सुगमता से बैंकिंग और पेमेंट की क्रियाएं की जा सकेंगी, जिससे व्यापारी पार्टनर्स को बेजोड़ सुविधा और एफिशियंसी प्राप्त हो सकेगी। एयरटेल पेमेंट्स बैंक के एमडी एवं सीईओ, अनुब्रत बिस्वास ने कहा हमें बिज़नेस सॉल्यूशंस संग्रह पेश करने की खुशी है। यह एक इनोवेटिव, सबसे अलग और उपयोगी पेशकश है, जो हमारे व्यापारी पार्टनर्स की बैंकिंग और पेमेंट की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाईन की गई है। यह सॉल्यूशन उद्योग में सबसे विशेष है क्योंकि यह यूज़र की जरूरत पर आधारित है, गहन शोध के बाद विकसित किया गया है, और छोटे एवं मध्यम आकार के व्यापारियों को डिजिटल बैंकिंग अपनाने का प्रोत्साहन देने के लिए डिज़ाईन किया गया है। इसकी शुरुआत डिजिटल इंडिया के उद्देश्य की ओर बढ़ने की हमारी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती है। एयरटेल के बिज़नेस बैंकिंग संग्रह में एक विस्तृत पैकेज होगा, जो एयरटेल पेमेंट्स बैंक के चालू खाते के लाभ और क्यूआर कोड द्वारा पेमेंट प्राप्त करने तथा नए लॉन्च किए गए साउंडबॉक्स द्वारा वॉईस से पेमेंट की पुष्टि प्राप्त करने के साथ ऐसा प्लान पेश करेगा, जिसमें इंश्योरेंस के कॉम्प्लिमेंट्री बेनेफिट्स प्राप्त हो सकेंगे। इसके अलावा इस संग्रह द्वारा व्यापारियों को बैंक के भरोसेमंद पार्टनर्स से लोन' का आवेदन करने की क्षमता भी मिलेगी। सुगम बिज़नेस बैंकिंग का अनुभव एयरटेल पेमेंट्स बैंक का जीरो बैलेंस चालू खाता छोटे और मध्यम व्यवसायों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

आईपीएल 2024 के शेष लीग मैचों से बाहर हो सकते हैं मयंक

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के तेज गेंदबाज मयंक यादव, जिन्हें मंगलवार को मुंबई इंडियंस (एमआई) के खिलाफ मैच के दौरान पेट में दर्द के कारण मैदान से बाहर जाना पड़ा, के आईपीएल 2024 के शेष लीग मैचों से बाहर होने की संभावना है। मयंक को मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच के दौरान चोट लगी थी जिससे उनके आगे मैच खेलने पर संशय पैदा हो गया है। मयंक पिछले चार सप्ताह में दूसरी बार चोटिल हुए हैं। सूत्रों ने बताया, मंयक यादव के पूरी तरह ठीक होने में पहले की अपेक्षा अधिक समय लगेगा। वह बुरी स्थिति में नहीं हैं, लेकिन शेष मैचों में उनकी भागीदारी संदेह में है। बुधवार को उनका स्कैन किया गया है लेकिन रिपोर्ट आनी बाकी है। मेडिकल टीम ने मयंक यादव को कम से कम तीन सप्ताह के आराम का सुझाव दिया है। एलएसजी के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर ने स्टार तेज गेंदबाज मयंक यादव की चोट पर अपडेट देते हुए कहा है कि परफेक्ट रिहैबिलिटेशन से गुजरने के बावजूद, युवा खिलाड़ी को अभी भी थोड़ी परेशान है। कोच ने कहा, ऐसा लगता है कि उसे एक बार फिर उसी जगह पर दर्द है। उसका पुनर्वास बिल्कुल सही रहा है, उसने पिछले कुछ हफ्तों में दर्द रहित गेंदबाजी की है, वह अच्छी स्थिति में दिख रहा है। हालांकि, उसे फिर थोड़ी परेशानी हुई है जिस पर जांच के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। हालांकि, सूत्रों ने दावा किया कि मयंक एमआई के खिलाफ मैच के लिए फिट नहीं थे, लेकिन तीन सप्ताह में पांच मैच मिस करने के बाद प्लेइंग-11 में लौट आए क्योंकि कप्तान केएल राहुल उन्हें अपनी टीम में शामिल करना चाहते थे। मंगलवार को एकाना क्रिकेट स्टेडियम में मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच में 3.1 ओवर में 31 रन देकर 1 विकेट के आंकड़े पर चोट के कारण उन्होंने मैदान छोड़ दिया। एलएसजी टूर्नामेंट का अपना आखिरी लीग मैच 17 मई को मुंबई इंडियंस के खिलाफ खेलेगा।

भारत के मसालों से डरा दुनिया का बाजार, दांव पर लगा 45 हजार करोड़ का कारोबार

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत के मसाले दुनियाभर में खाए और बेचे जाते हैं, लेकिन जिस तरह के क्वालिटी से संबंधित मामले कई देशों से निकलकर सामने आए हैं, उससे देश के मसाला कारोबार को बड़े संकट में डाल दिया है। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव की रिपोर्ट के अनुसार विदेशों में भारत का मसाला कारोबार काफी बड़ा है। अगर ये जांच की आंच चीन से लेकर यूरोप तक फैलती है तो स्थिति और भी गंभीर हो सकती है। इन तमाम बाजारों में करीब 45 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा दांव पर लगे हैं। विदेशी सरकारों की ओर से कार्रवाई की गई तो भारत के मसाला एक्सपोर्ट को 50 फीसदी से ज्यादा नुकसान उठाना पड़ सकता है। दरअसल, भारत को अपने मसाला एक्सपोर्ट के संबंध में क्वालिटी संबंधी मामले आने के बाद देश की काफी किरकिरी हुई है। सिंगापुर और हॉन्गकॉन्ग के बाद ऑस्ट्रेलिया ने भी मसालों की जांच शुरू कर दी है। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव यानी जीटीआरआई ने कहा कि हर दिन नए देश भारतीय मसालों की क्वालिटी को लेकर चिंता जाहिर कर रहे हैं। जीटीआरआई ने कहा कि इस मुद्दे पर तत्काल ध्यान देने और भारत के प्रसिद्ध मसाला उद्योग की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए कार्रवाई की आवश्यकता है।

जापान से हारकर भारतीय महिलाओं का अभियान क्वार्टर फ़ाइनल में समाप्त

चेंगदू (चीन)(एजेंसी)। भारतीय महिला बैडमिंटन टीम ने एकल खिलाड़ियों के शानदार प्रयास के बावजूद गुरुवार को पूर्व चैंपियन जापान से 0-3 से हारकर क्वार्टर फाइनल में अपना बीडब्ल्यूएफ थॉमस और उबेर कप 2024 अभियान समाप्त कर दिया। सभी अनुभवी खिलाड़ियों की अनुपस्थिति में, फिर भी कनाडा और सिंगापुर पर दो ठोस जीत के साथ अंतिम आठ चरण में जगह बनाना युवा दल के लिए एक बड़ा मौका था। शुरुआती एकल में, अश्मिता चालिहा ने वर्ल्ड नंबर 11 अया ओहोरी के खिलाफ एक मैच प्वाइंट बचाया। और निर्णायक गेम में ब्रेक पर 11-9 से आगे थीं। लेकिन ओहोरी ने अपने पूरे अनुभव का इस्तेमाल करते हुए तुरंत गति बढ़ा दी और लगातार पांच अंक ले लिए और फिर एक घंटे और सात मिनट में मैच 21-10, 22-24, 21-15 से जीत लिया। अपने प्रदर्शन के बारे में बात करते हुए अश्मिता ने कहा, सैयद मोदी इंटरनेशनल में मैं उनसे बहुत बुरी तरह हार गई थी और मैं इस मानसिकता के साथ मैच में उतरी थी कि मुझे अपना सर्वश्रेष्ठ खेलना है... तीसरे गेम में, मैंने 11-9 के बाद कुछ मूर्खतापूर्ण गलतियाँ कीं और इसके कारण मुझे मैच गंवाना पड़ा।

रूसी तेल खरीदने पर सरकार के सख्त रुख से भारत के आयात बिल में 8 अरब डॉलर की बचत हुई

नई दिल्ली(एजेंसी)। पश्चिमी दबाव के बावजूद रूस से सस्ता तेल खरीदना जारी रखने की भारत की रणनीति के परिणामस्वरूप वित्तवर्ष 2022-23 के पहले 11 महीनों के दौरान देश के तेल आयात बिल में लगभग 7.9 अरब डॉलर की बचत हुई है। इससे देश को चालू खाता घाटा कम करने में भी मदद मिली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार मॉस्को के खिलाफ पश्चिमी प्रतिबंधों के बावजूद रूस के साथ अपने संबंध बनाए रखने के लिए दृढ़ है। व्यापार ट्रैकिंग एजेंसियों केप्लर और एलएसईजी द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, इस साल अप्रैल के दौरान भारत ने एक महीने पहले की तुलना में अधिक रूसी तेल का आयात किया, लेकिन इराक और सऊदी अरब से कम आयात किया। आंकड़ों से पता चलता है कि अप्रैल के दौरान आयात 13-17 प्रतिशत बढ़ गया।अप्रैल में रूस भारत का शीर्ष तेल आपूर्तिकर्ता रहा, उसके बाद इराक और सऊदी अरब रहे। आंकड़ों से पता चलता है कि इराक से इसके तेल आयात में 20-23 प्रतिशत की गिरावट आई है। चूंकि भारत दुनिया में कच्चे तेल का तीसरा सबसे बड़ा आयातक है, रूसी तेल की इन बड़ी खरीद ने विश्व बाजार में कीमतों को अधिक उचित स्तर पर रखने में मदद की है, जिससे अन्य देशों को भी लाभ हुआ है। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा संकलित आंकड़ों से पता चलता है कि मात्रा के संदर्भ में वित्तवर्ष 2024 के 11 महीनों में रूस से आयातित कच्चे पेट्रोलियम की हिस्सेदारी वित्तवर्ष 2022 में 2 प्रतिशत से बढ़कर 36 प्रतिशत हो गई, जबकि पश्चिम एशियाई देशों (सऊदी अरब) से संयुक्त अरब अमीरात और कुवैत) 34 प्रतिशत से घटकर 23 प्रतिशत पर आ गया। रूसी तेल पर छूट से तेल आयात बिल में भारी बचत हुई। आईसीआरए की एक रिपोर्ट के अनुसार, रूस से आयात का अनुमानित इकाई मूल्य वित्तवर्ष 2023 और वित्तवर्ष 2024 के 11 महीनों में पश्चिम एशिया से संबंधित स्तरों की तुलना में क्रमश: 16.4 प्रतिशत और 15.6 प्रतिशत कम था। आईसीआरए का अनुमान है कि इससे वित्तवर्ष 2023 में भारत के तेल आयात बिल में 5.1 अरब डॉलर और वित्तवर्ष 2024 के 11 महीनों में 7.9 अरब डॉलर की बचत हुई, जिससे वित्तवर्ष 2023-24 में भारत का चालू खाता घाटा (सीएडी)/जीडीपी अनुपात 15-22 बीपीएस तक कम हो गया।

साद बिन जफर पहली बार कनाडा की टी20 विश्व कप टीम की कप्तानी करेंगे

ओंटारियो(एजेंसी)। कनाडा ने वेस्टइंडीज और यूएसए में 1 जून से शुरू होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की है, जिसमें ऑलराउंडर साद बिन जफर को कप्तान बनाया गया है। जफर पहली बार टी20 विश्व कप में कनाडा की कप्तानी करेंगे। टीम को पूर्व श्रीलंकाई और कनाडाई अंतर्राष्ट्रीय पुबुदु दस्सानायके द्वारा प्रशिक्षित किया गया है, जिन्होंने 2022 में बागडोर संभाली थी। कनाडा को ग्रुप ए में भारत, पाकिस्तान, आयरलैंड और अमेरिका के साथ रखा गया है। वे 1 जून को डलास में पड़ोसी देश अमेरिका के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेंगे, इसके बाद उत्तरी अमेरिकी देश को 7 जून को आयरलैंड का सामना करना है। इसके बाद 11 जून को पाकिस्तान और 15 जून को भारत के खिलाफ उनका मुकाबला होगा। टीम- साद बिन जफर (कप्तान), आरोन जॉनसन, डिलन हेलिगर, दिलप्रीत बाजवा, हर्ष ठाकेर, जेरेमी गॉर्डन, जुनैद सिद्दीकी, कलीम सना, कंवरपाल ताथगुर (विकेटकीपर), नवनीत धालीवाल, निकोलस किर्टन, परगट सिंह, रविंदरपाल सिंह, रेयानखान पठान, श्रेयस मोव्वा (विकेटकीपर)। रिर्जव- तजिंदर सिंह, आदित्य वरदराजन, अम्मार खालिद, जतिंदर मथारू, परवीन कुमार।

एसके फाइनेंस लिमिटेड ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए सेबी के समक्ष दाखिल किया डीआरएचपी

नई दिल्ली : वर्ष 1994 में स्थापित एसके फाइनेंस लिमिटेड ('कंपनी') वाहन फाइनेंसिंग सेगमेंट और एमएसएमई फाइनेंसिंग सेगमेंट में अपनी समकक्ष कंपनियों के मुकाबले सबसे तेजी से बढ़ने वाली कंपनी है, जिसका विश्लेषण वित्तीय वर्ष 2021 और वित्तीय वर्ष 2023 के बीच की अवधि के लिए संबंधित सेगमेंट में प्रबंधन के तहत परिसंपत्तियों ('एयूएम') सीएजीआर के आधार पर किया गया है (स्रोत- क्रिसिल रिपोर्ट)। कंपनी ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। कंपनी की योजना ?2,200 करोड़ तक के इक्विटी शेयरों (प्रत्येक का अंकित मूल्य 1 रुपये) के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम के जरिए धन जुटाने की है। कंपनी के प्रमोटर राजेंद्र कुमार सेतिया, यश सेतिया और राजेंद्र कुमार सेतिया एचयूएफ हैं। आरंभिक सार्वजनिक निर्गम में 1 रुपये प्रत्येक इक्विटी शेयर के अंकित मूल्य के साथ 500 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयरों का नया निर्गम और विक्रेता शेयरधारक की ओर से 1700 करोड़ रुपये तक के शेयरों का 'ऑफर फॉर सेल' (ओएफएस) शामिल है। बिक्री के लिए प्रस्ताव में राजेंद्र कुमार सेतिया द्वारा 180 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयर, राजेंद्र कुमार सेतिया एचयूएफ (प्रमोटर सेलिंग शेयरहोल्डर) द्वारा 20 करोड़ रुपये तक, इवॉल्वेंस कोइन्वेस्ट फर्स्ट द्वारा 75 करोड़ रुपये तक, इवॉल्वेंस इंडिया फंड थ्री लिमिटेड द्वारा 25 करोड़ रुपये तक, नॉरवेस्ट वेंचर पार्टनर्स एक्स - मॉरीशस द्वारा 700 करोड़ रुपये तक और टीपीजी ग्रोथ फेर्थ एसएफ पीटीई लिमिटेड द्वारा 700 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयर शामिल हैं ('निवेशक विक्रय शेयरधारक')। कंपनी एक नॉन-डिपॉजिट लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्त कंपनी मिडिल लेयर ('एनबीएफसी एमएल') है, जो भारतीय रिजर्व बैंक ('आरबीआई') के साथ भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 45आईए के तहत पंजीकृत है। कंपनी दो वर्टिकल में काम कर रही है- वाहन फाइनेंसिंग और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए फाइनेंसिंग।

आधार हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के इक्विटी शेयरों का आईपीओ 8 मई, 2024 को खुलेगा

नई दिल्ली : आधार हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड (कंपनी) ने बुधवार, 8 मई, 2024 को अपने इक्विटी शेयरों की इनीशियल पब्लिक ऑफरिंग (ऑफर) खोलने का प्रस्ताव करती है। इनीशियल पब्लिक ऑफरिंग में 10,000 मिलियन रुपए तक के इक्विटी शेयरों का एक नया इश्यू (फ्रेश इश्यू) और बीसीपी टॉपको वीआईआई पीटीई लिमिटेड (प्रमोटर सेलिंग शेयरधारक) द्वारा ऑफर फॉर सेल में 20,000 मिलियन रुपए तक के इक्विटी शेयरों की बिक्री की पेशकश शामिल है। (बिक्री के लिए प्रस्तावऔर फ्रेश इश्यू के साथ, ऑफर)। कंपनी फ्रेश इश्यू से शुद्ध आय का उपयोग करने का प्रस्ताव करती है, (द्ब) आगे की उधार देने के लिए भविष्य की पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए; और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्य। इक्विटी शेयरों की पेशकश 30 अप्रैल, 2024 के रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) के माध्यम से की जा रही है, जो बेंगलूरु में कंपनी रजिस्ट्रार, कर्नाटक (आरओसी) के पास दायर किया गया है। आरएचपी के माध्यम से जारी किए गए इक्विटी शेयरों को बीएसई लिमिटेड (बीएसई) और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनएसईबीएसई के साथ, स्टॉक एक्सचेंज) जैसे स्टॉक एक्सचेंजों पर सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है। ऑफर के प्रयोजनों के लिए, नामित स्टॉक एक्सचेंज एनएसई होगा। ब्लैकस्टोन के प्राइवेट इक्विटी एशिया के हेड अमित दीक्षित ने कहा, आधार हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के लिए यह लिस्टिंग एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और इस बात का एक बड़ा उदाहरण है कि हम क्या करते हैं, हम भारत का निर्माण करने वाले व्यवसायों का निर्माण करते हैं। हम व्यवसाय को बढ़ाने के लिए अपने पैमाने, नेटवर्क और सर्वोत्तम वैश्विक तरीकों को लेकर आए हैं और कंपनी को उत्पत्ति से संग्रह तक अपनी प्रक्रियाओं को डिजिटल बनाने में सशक्त बनाया है। यह एक अद्भुत साझेदारी रही है और व्यवसाय आज जिस स्थिति में है, उस पर हमें इससे अधिक गर्व नहीं हो सकता है।' ब्लैकस्टोन प्राइवेट इक्विटी के सीनियर मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश मेहता ने कहा, आधार हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के वंचित भारतीयों को अपना घर बनाने में सक्षम बनाने और कंपनी के परिवर्तन और विकास में भूमिका निभाने के मिशन का हिस्सा बनना फायदेमंद है।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 04 मई 2024

राऊरकेला-झारसुगुढ़ा रेलवे स्टेशनों के बीच लेवल क्रॉसिंग में गर्डर लॉन्चिंग का कार्य, फलस्वरूप कुछ गाड़ियों का परिचालन रहेगा प्रभावित

रायपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 04 मई 2024 को टाटानगर एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) से चलने वाली 18109/18110 टाटानगर-नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी)-टाटानगर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 04 मई 2024 को दुर्ग से चलने वाली 13287 दुर्ग-आरा साउथ बिहार एक्सप्रेस दुर्ग से 03 घंटे 45 मिनट देरी से रवाना होगी।

सन्मति नगर दिगम्बर जैन खण्डेलवाल समाज द्वारा नवल बाई दीपचंद बड़जात्या छात्रावास भवन का भूमि खनन कार्य प्रारंभ किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। फाफाडीह सन्मति नगर श्री दिगम्बर जैन खण्डेलवाल पंचायत समिति के द्वारा नवलबाई दीपचंद बड़जात्या छात्रावास भवन निर्माण कार्य दिनांक 2 मई 2024 को पूरे विधि विधान से शुरू किया गया।

पंचायत के अध्यक्ष अरविंद बड़जात्या ने बताया कि लगभग 29000 फिट भूमि मे गार्डन, पार्किंग, चार मंजिला छात्रावास भवन निर्माण कार्य का खनन मुहूर्त गणनी माता जी सौभाग्यमति जी के संघ की पावन निश्राय मे सकल दिगम्बर जैन समाज की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

उल्लेखनीय है कि स्व ताराचंदजी बड़जात्या परिवार निवासी रायपुर, खामगांव, वर्धा के द्वारा ये भूमि दान मे दी गई थी। जिसमें आधुनिक शैली से निर्माण किया जाएगा भूतल मे पार्किंग, गार्डन, भोजशाला, कर्मचारी के लिए रूम, ऑफिस एवं फूड वेस्ट जेसी आवश्यक मूलभूत सुविधाएं रहेगी।

प्रथमतल मे करीब दस हजार फिट की एयरकंडीशन हाल के साथ लेट बाथ, किचन, वाशिंग एरिया, दो लिफ्ट, रहेगी, द्वितीय - तृतीय तले मे 25 वातानुकूलित रूम, दो छोटे हाल एवं डारमेट्रि का निर्माण किया जाएगा, चौथे माले मे किचन, प्रसाधन की सुविधाएं उपलब्ध रहेगी।

श्री दिगम्बर जैन खण्डेलवाल पंचायत समिति के द्वारा निर्मित किए जा रहे इस भवन में पूरे समाज के लोगों का योगदान दिया जा रहा है जो कि 2 वर्ष मे पूरा होने की संभावना है कार्यक्रम का संचालन अनिल छाबड़ा एवं खनन विधि पंडित डॉ अजित जैन शास्त्री के द्वारा किया गया।

फाफाडीह क्षेत्र में रहने वाले जैन समाज के लोगों के लिए विगत वर्षो से एक भवन की आवश्यकता महसूस की जा रही थी जिसे दिगम्बर जैन खण्डेलवाल समाज ने पूरा करने का प्रयास किया है जो कि सराहनीय कदम है। **-अरविंद बड़जात्या**

रायपुर में मतदान 7 मई को सुबह 7 से शाम 6 बजे तक

मतदाताओं को प्रेरित करने में जुटी सैकड़ों संस्थाएं ● होटल, सैलून, स्कूलों ने भी दिए सेवाओं के ऑफर

रायपुर (विश्व परिवार)। शहर के अनेक व्यापारिक, औद्योगिक, शैक्षणिक, चिकित्सा संस्थानों, मनोरंजन गृह व संगठनों ने लोकसभा निर्वाचन-2024 हेतु मतदान तिथि 07 मई को देश के महापर्व के रूप में मनाने की तैयारी की है। इन संस्थानों ने मतदाताओं हेतु कई ऐसे ऑफर की घोषणा की है, जो अंगुली पर नीली स्याही का निशान दिखाकर सीधे प्राप्त की जा सकेगी। ऐसे कई संस्थान मतदान केन्द्रों के आस-पास गर्मी के मौसम को देखते हुए ठंडे पेयजल, नींबू पानी आदि की सुविधा देने आगे आ रहे हैं, वहीं स्कूलों के विद्यार्थी नि:शक्त व बुजुर्गों को पोलिंग बूथ आने पर मतदान मित्र की जिम्मेदारी का सेवाभावी कार्य में जुट रहे हैं। 100 से भी अधिक संस्थान कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव कुमार सिंह से भेंट कर इस आशय का लिखित प्रस्ताव भी सौंपा है।

चुनाव के पर्व को देश का गर्व मानते हुए रायपुर के नागरिक व कई बड़े संस्थान अपने स्तर पर स्वैच्छिक छूट प्रदान करने के प्रस्ताव के साथ आगे आए हैं, इसी श्रृंखला में सायाजी होटल ग्रुप ने 07 से 10 मई तक फूड बिल में 20 प्रतिशत की छूट की घोषणा की है। इन्फिनिटी सैलून में 07 से 12 मई तक नि:शुल्क हेयर और स्कीन परामर्श के साथ ही उनकी सेवाओं में 25 प्रतिशत छूट मिलेगी। इनके मेम्बरशिप प्लान में एक वर्ष तक 25 प्रतिशत डिस्काउंट भी दिए जाने की बात भी इन्फिनिटी सैलून ने लिखित प्रस्ताव में दिया है। इसी तरह मीनाक्षी सैलून में सभी तरह की सेवाओं में 12 मई तक छूट दिए जाने की घोषणा की गई है।

इसके अलावा सुमीत बाजार समूह मतदान कर्मियों को गर्मी की तपिश से बचाव के लिए लगभग 15 हजार से भी अधिक नि:शुल्क गमछे उपलब्ध करा रहा है।

शैक्षणिक संस्थानों ने भी लोकतंत्र के महापर्व पर विभिन्न मतदान केन्द्रों में अपनी सेवाओं का प्रस्ताव दिया है। श्री वेदांता पब्लिक स्कूल बीरगांव द्वारा बीरगांव के 3 मतदान केंद्रों में मतदाताओं के लिए नींबू पानी, शीतल जल, शरबत की व्यवस्था की जाएगी। इसके अलावा मतदान कार्य में ड्यूटीरत कर्मचारियों की सुविधाओं का जिम्मा भी स्कूल प्रबंधन उठाएगा। आदर्श उ.मा. विद्यालय बीरगांव द्वारा मतदाताओं के लिए ऐसी ही व्यवस्थाओं के अलावा मतदान दल हेतु तीन कूलर सहित सभी आवश्यक प्रबंध सुनिश्चित करेगा। संत ज्ञानेश्वर उ.मा. विद्यालय संजीवनी कैंसर अस्पताल के साथ मिलकर नौ बूथों में मतदाताओं के लिए शीतल पेयजल, नींबू पानी आदि के अलावा मतदान कर्मियों हेतु आवश्यक प्रबंध करेगा।

देशबंधु हायर सेकेंडरी स्कूल द्वारा तीन मतदान केन्द्रों में सेल्फी पाइंट व अन्य स्कूलों की तरह बुनियादी व्यवस्थाओं के साथ एनएसएस कैडेट्स को मतदान मित्र की जिम्मेदारी सौंपी जा रही है। गुढ़ियारी के तिलक भारती हायर सेकेंडरी स्कूल द्वारा दो बूथ में मतदान दल के लिए कूलर की व्यवस्था के साथ मतदाताओं के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही है। दिशा कॉलेज का स्टाफ पूरे दिन उपस्थित रहकर मतदान कर्मियों व मतदाताओं के लिए आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करेगा।

जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा की जा रही व्यवस्थाओं में बतौर सहयोगी प्रतिदिन दर्जनों संस्थाएं अपना प्रस्ताव देकर लोकतंत्र के इस महान कार्य में अपनी सहभागिता देने आगे आ रहे है, जिसकी वजह से आम मतदाताओं में मतदान को लेकर उत्साह बढ़ा है और देश के महापर्व के तौर पर सभी वर्ग का जुड़ाव मतदान के लिए बढ़ते जा रहा है। रायपुर में मतदान 7 मई को प्रात: 7 से शाम 6 बजे तक होगा।

एनटीपीसी कोरबा ने महिला संविदा कर्मियों के लिए स्तन कैंसर शिविर का किया आयोजन

कोरबा (विश्व परिवार)। एनटीपीसी कोरबा ने महिला संविदा कर्मियों के लिए स्तन कैंसर शिविर का आयोजन किया। स्तन कैंसर भारत में महिलाओं में होने वाला दूसरा सबसे आम कैंसर है और कैंसर से होने वाली मौतों का सबसे बड़ा कारण है। हालांकि, अगर शुरुआती चरण में इसका पता लग जाए और इसका इलाज हो जाए तो यह भी ठीक हो जाता है। हालांकि शहरी आबादी में इसके होने की दर ज्यादा है, लेकिन शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण ग्रामीण महिलाओं को इसका सबसे ज्यादा खामियाज़ा भुगतना पड़ता है।

अल्ट्रासोनोग्राफी शुरुआती पहचान के लिए एक बेहतरीन उपकरण है क्योंकि यह सस्ती, आसानी से उपलब्ध है और स्तन में छोटे घावों के प्रति संवेदनशील है और यह अच्छी सुविधा एनटीपीसी कोरबा अस्पताल में उपलब्ध है।

मैत्री महिला समिति, जैसा कि सभी जानते हैं, एनटीपीसी कोरबा के आस-पास के गांवों में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने और शिक्षित करने की दिशा में समय-समय पर प्रयास करती रही है। इस बार एमएमएस (मैत्री महिला समिति) और एनटीपीसी अस्पताल, कोरबा ने हमारे समाज की वंचित बहनों की सेवा में एक कदम आगे बढ़ाने के लिए हाथ मिलाया है।

एनटीपीसी कोरबा अस्पताल परिसर में 3 मई 2024 को स्तन कैंसर जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन एमएमएस की अध्यक्ष श्रीमती राखी माहेश्वरी और बीयूएच एनटीपीसी कोरबा के श्री सरित माहेश्वरी ने किया। इस अवसर पर एनटीपीसी कोरबा के सीएमओ डॉ. विनोद कोल्हटकर, एमएमएस के पदाधिकारी, विभागाध्यक्ष और यूनियन व एसोसिएशन के सदस्य भी मौजूद थे। शिविर कई चरणों में आयोजित किया जाएगा। पहले चरण का लक्ष्य बस्ती की संविदा महिला श्रमिकों और घरेलू सहायिकाओं को लाभ पहुंचाना था। डॉ. प्रतिभा अर्चना दास, वरिष्ठ परामर्शदाता (प्रसूति एवं स्त्री रोग) और डॉ. परिमिता हुरा, परामर्शदाता (रेडियोलॉजी) ने जांच की। डॉ. प्रतिभा दास ने जांच के पहले चरण के रूप में नैदानिक परीक्षण किया। अगले चरण के लिए उपयुक्त पाई गई महिलाओं की डॉ. परिमिता हुरा ने अल्ट्रासाउंड जांच की। शिविर के पहले दिन 52 मरीजों का पंजीकरण कर उनकी चिकित्सकीय जांच की गई। 37 की यूएसजी स्कैनिंग भी की गई। एमएमएस और एनटीपीसी अस्पताल की यह पहल समाज की वंचित महिलाओं के बेहतर स्वास्थ्य के प्रति विश्वास बढ़ाने और उन्हें आश्वस्त करने में सहायक है।

महाराष्ट्र मंडल में मतदाता जागरूकता अभियान की तैयारियां जोरशोर से जारी

रविवार को शाम 6 बजे से व्यस्ततम 12 चौराहों पर चलेगा व्यापक अभियान

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराष्ट्र मंडल रविवार पांच मई को शाम 6 बजे से शहर के 12 व्यस्ततम चौराहों पर मतदाता जागरूकता अभियान चलाने जा रहा है। इस अभियान की तैयारियों को लेकर मंडल के विभिन्न केंद्रों में लगातार बैठकों का दौर जारी है। इधर चौबे कॉलोनी स्थित मंडल भवन में अभियान के लिए 250 तख्तियां तैयार हो गईं हैं, जिन्हें 12 व्यस्ततम चौराहों पर दिखाकर आम जनता से वोट डालने की अपील की जाएगी।

महिला प्रमुख विशाखा तोपखानेवाले ने बताया कि प्रत्येक शनिवार को शाम 7 बजे 15 केंद्रों की महिलाएं समीपस्थ हनुमान मंदिरों में राम रक्षा स्त्रोत और हनुमान चालीसा का पाठ करतीं हैं। पिछले दो शनिवार से आध्यात्मिक समिति के इस भक्तिमय अभियान के साथ मंदिर में उपस्थित श्रद्धालुओं को मतदान करने का दायित्व याद दिलाया जा रहा है और उनसे यह आश्वासन भी लिया जा रहा है कि वे मतदान अवश्य करेंगे।

आध्यात्मिक समिति की प्रमुख आस्था काले के अनुसार शनिवार, चार मई को भी सभी 15 केंद्रों के सभासद समीपस्थ मंदिरों में जाकर राम रक्षा स्त्रोत और हनुमान चालीसा पाठ करने के दौरान उपस्थित भक्तजनों को मतदान करने की शपथ दिलाएंगे। इस बीच रविवार शाम 6:00 बजे शहर के व्यस्ततम 12 चौराहों पर मतदाता जागरूकता अभियान की तैयारियों पर चर्चा करेंगे। साथ ही इस अभियान से बड़ी संख्या में लोगों को जोड़ने की योजना अमल में लाएंगे। अध्यक्ष अजय काले ने कहा कि दीपावली से अब तक महाराष्ट्र मंडल में 15 बड़े- छोटे आयोजन हुए हैं और उनमें उपस्थित आजीवन सभासदों सहित दर्शकों को मतदान करने की शपथ दिलाई गई है।

संक्षिप्त समाचार

मारुति सुजुकी के अधिकृत विक्रेता विश्वभारती ऑटोमोबाइल्स, मोवा की शानदार उपलब्धि

रायपुर (विश्व परिवार)। मारुति सुजुकी ने अपनी वार्षिक कॉन्फ्रेंस 2023 -24 के दौरान अंताल्या, तुर्की मे विश्वभारती आटोमोबाइल नेक्सा को बहु प्रतिष्ठित ओमेगा अवार्ड एवं एरीना को रॉयल प्लेटिनम अवार्ड से नवाजा। विधानसभा रोड, मोवा स्थित विश्वभारती ऑटोमोबाइल्स ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में एक शानदार उपलब्धि हासिल करते हुए इतिहास रचा है। समूचे छत्तीसगढ़ राज्य में केवल चुनिंदा संस्थानों ने रॉयल प्लेटिनम बैंड हासिल किया है जिसमे विश्वभारती एरिना का नाम भी शामिल है 7 साथ ही राज्य में उपस्थित सभी संस्थानों में से केवल विश्वभारती नेक्सा चैनल ने ओमेगा बैंड प्राप्त कर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। यह उपलब्धि विश्वभारती ऑटोमोबाइल्स की समर्पित टीम और ग्राहकों के अटूट विश्वास का प्रतीक है। विश्वभारती ऑटोमोबाइल्स अपने ग्राहकों को बेहतरीन सेवा और अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है, और यह पुरस्कार उनकी इस प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

शंकर नगर वार्ड क्रमांक-30 में ढोल बाजे के साथ घर-घर किया गया जनसम्पर्क

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर लोकसभा क्षेत्र में लगातार पर्ची वितरण कार्य एवं मतदाताओ को पुष्प प्रदान कर मतदान की अपील की गई। शंकर नगर वार्ड क्रमांक 30 में आज पार्षद सुमन राम प्रजापति के नेतृत्व में पर्ची वितरण किया गया एवं प्रत्येक घर घर जा कर नरेंद्र मोदी जी को पुन: प्रधानमंत्री बनाने एवं बृजमोहन भैया को सर्वाधिक मतों से विजयी बनाने हेतु अधिकतम मतदान हेतु मतदाताओं से सम्पर्क किया गया। इस दौरान, पार्षद सुमन प्रजापति शक्ति केंद्र प्रभारी राम प्रजापति, शक्ति केंद्र प्रभारी रामदास मानिकपुरी, विस्तारक सचिदानन्द दुबे, बूथ अध्यक्ष गणों में वीरमणि चौबे, महेंद्र धनकर, नितिन श्रीवास्तव, रमेश निषाद, देवेंद्र चावला, अनूप वर्मा, आशिष असाटी, उपाध्यक्ष राम तांडी, महेंद्र धनकर, यशवर्धन अग्रवाल, भाजपा कार्यकर्ता शंभु लौवंशी, वैभव शर्मा, मनवीर शर्मा, चंदा साहू, भारती यादव, अंजू दीप, सहित वार्ड नागरिकगण उपस्तिथ रहे।

रायपुर स्टेशन पर मिस्टिंग सिस्टम चालू

रायपुर स्टेशन के प्लेटफार्म नं.- 1, 2, 3, 5 और 6 में लगे मिस्टिंग से शीतलता गर्मी से राहत

मिस्टिंग मशीन से यात्रियों को मिल रही है भीषण गर्मी में भी शीतल वातावरण

रायपुर (विश्व परिवार)। मंडल रेल प्रशासन द्वारा रायपुर स्टेशन में यात्रियों को मौसम के अनुकूल बेहतर यात्री सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में बेहतर कार्य किया जा रहा है। इसी संदर्भ में गर्मी के दिनों में स्टेशनों के प्लेटफार्म में यात्रियों को गर्मी से राहत दिलाने तथा शीतल भरा वातावरण की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु रायपुर स्टेशन के प्लेटफार्म नं.- 01, प्लेटफार्म 02, 03, 05 और 06 में लगे मिस्टिंग मशीन की सुविधा को टेस्टिंग के पश्चात् चालू कर दिया गया है। पूरे प्लेटफार्म को कवर करने हेतु प्लेटफार्म के दोनों तरफ पाइप लाइन बिछाई गई है, जिसके फव्वारे से पूरे प्लेटफार्म का वातावरण शीतल हो गया है। इस मशीन से पानी के फुवारे निकलते हैं जो की प्लेटफार्म को चारों तरफ से ठंडा कर यात्रियों को शीतलता प्रदान करते हैं साथ ही बढ़ते तापमान को कम करने में भी मदद मिलती है।

इस सुविधा की उपलब्धता से यात्रियों को भीषण गर्मी से राहत तो मिल ही रही है साथ ही उन्हें गर्मी के दिनों में भी शीतल भरा वातावरण का अहसास हो रहा है। इसके शुरू होने से रायपुर स्टेशन से आने-जाने वाले यात्रियों को प्लेटफार्म में सुकून भरी राहत प्राप्त हो रही है। यात्रियों के ट्रेन से उतरते ही पानी की फुहारों से वातावरण के साथ ही उनका मिजाज भी कूल-कूल हो रहा है। यात्रियों द्वारा इसकी प्रशंसा भी की जा रही है।

यात्रियों की सुरक्षित यात्रा के लिए चलाई जा रही है 07 दिनों का अग्नि सुरक्षा सप्ताह

अग्नि सुरक्षा जागरूकता के महत्व की जानकारी तथा फ्रंट लाइन कर्मचारियों को अग्निशमन यंत्र चलाने का दिया जा रहा प्रशिक्षण

रायपुर (विश्व परिवार)। रेलवे बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशानुसार रायपर मंडल से गुजरने वाली सभी गाड़ियों में 01 मई से 07 मई 2024 तक अग्नि सुरक्षा सप्ताह चलाया जा रहा है। यात्री सुरक्षा रेलवे की सर्वोच्च प्राथमिकता है। अग्नि सुरक्षा जागरूकता सप्ताह सुरक्षित यात्रा वातावरण बनाने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य यात्रियों को ट्रेनों में यात्रा के दौरान अग्नि सुरक्षा के महत्व से अवगत कराना तथा जागरूकता अभियान चलाकर आगजनी की घटनाओं के जोखिम को कम करना है।

इसी कड़ी में रायपुर मंडल द्वारा मंडल के प्रमुख रेलवे स्टेशनों तथा मण्डल से गुजरने वाली सभी ट्रेनों में विभागीय स्तर पर आग की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान चलाई जा रही है। गाड़ियों के पैंट्रीकारों व कोचों में अग्नि सुरक्षा की जांच की जा रही है। यात्रियों को ट्रेनों में यात्रा करते समय अग्नि सुरक्षा के महत्व के बारे में जानकारी दी जा रही है तथा यात्रियों को यात्रा के दौरान ज्वलनशील सामानों के साथ यात्रा नहीं करने के प्रति जागरूक किया जा रहा है। उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से भी प्रतिबंधित सामानों को ट्रेन में नहीं ले जाने के प्रति जागरूक किया जा रहा है। आपातकालीन स्थिति में आग की रोकथाम के लिए स्टेशनों और गाड़ियों के कोचों में अग्निशमन यंत्र भी उपलब्ध कराए गए है। साथ ही गाड़ियों व विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत रेलकर्मियों को अग्निशमन यंत्र का प्रयोग करने में दक्ष करने हेतु प्रशिक्षण अभियान चलाया जा रहा है जिससे कि वे कार्यालयों एवं गाड़ियों में उपलब्ध अग्निशमन यंत्र का प्रयोग कर अग्नि दुर्घटना का बचाव प्रभावी रूप से कर सकें। अग्नि सुरक्षा जागरूकता के महत्व की जानकारी रायपुर रेलवे स्टेशन पर वाणिज्य विभाग के कर्मचारी टिकट चेकिंग स्टाफ, पार्सल बुकिंग स्टाफ को अग्निशमन यंत्र चलाने का प्रशिक्षण दिया गया। मंडल संरक्षा विभाग के नागरिक सुरक्षा निरीक्षक द्वारा अग्नि सुरक्षा पर विशेष प्रशिक्षण अभियान चलाया गया। प्रशिक्षण के दौरान नागरिक सुरक्षा निरीक्षक के द्वारा क्लास लेकर सुरक्षा मानकों और अग्निशमन यंत्र का प्रयोग करने की जानकारी दी गई।

अधोसंरचना विकास की अनदेखी से बिजली की आँख-मिचौली, साय सरकार दिलाएगी राहत

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के जरूरतमंद गरीब, ग्रामीण परिवारों को 18 लाख मकानों से वंचित करने की पूर्व राज्य सरकार की मंशा तो उजागर हो गई लेकिन मोदी सरकार की अन्य कई योजनाएं भी पूर्व सरकार की हठधर्मिता के कारण पूरी नहीं हो पाई, जिसका खामियाजा आज प्रदेश के कम से कम एक दर्जन से अधिक जिलों के ग्रामीणों को भुगतना पड़ रहा है और बिजली की आँख-मिचौली की समस्या से जूझना पड़ रहा है।

छत्तीसगढ़ में कृषि पंपों की संख्या लगभग 6 लाख है। जिनकी सघनता मुख्यत: महासमुंद, धमतरी, बालोद, बेमेतरा, कवर्धा, राजनांदगांव, मुंगेली, कोरबा, सारंगढ़, रायगढ़, रायपुर, कांकेर, कोंडागाँव, खैरागढ़ आदि जिलों में है। एक अनुमान के अनुसार प्रदेश के कुल 6 लाख पंपों में से लगभग 70 प्रतिशत पंप इन्हीं जिलों में है जहाँ लो-वोल्टेज की समस्या उत्पन्न हो रही है। रबी मौसम अर्थात ग्रीष्मकालीन खेती के समय विद्युत प्रणाली पर लोड अचानक बढ़कर लगभग डेढ़ गुना हो जाता है। उदाहरण के लिए 4500 मेगावॉट के सामान्य लोड की तुलना में ग्रीष्मकाल में लोड बढ़कर 6300 मेगावॉट हो गया है। इस स्थिति से बचने के लिए कृषि पंपों में, संबंधित उपकेंद्रों में कैपेसिटर स्थापित करने से रिएक्टिव लोड को नियंत्रित किया जा सकता है इसके अलावा 5 साल पहले राज्य-स्तर पर फीडर सेपरेशन की योजना भी शुरू की गई थी। विगत सरकार ने इन उपायों पर ध्यान नहीं दिया तथा नरवा-गरवा जैसी योजनाओं को प्राथमिकता दी जिसके कारण मुख्य तकनीकी उपायों की प्राथमिकता ही समाप्त हो गई और विगत 5 वर्षों में टेक्निकल अपग्रेडेशन का नगण्य कार्य किया गया। इस तरह विद्युत प्रदाय की बुनियादी अधोसंरचना विस्तार का कार्य भी प्रभावित हुआ।

विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार गाँवों की शिकायतें सामने आने पर उच्चाधिकारियों द्वारा छानबीन की गई कि आखिर किन कारणों से अचानक ऐसी विपरीत खबरें आ रही हैं। जाँच पड़ताल में पता चला कि विगत सरकार द्वारा कृषि पंप फीडर सेपरेशन, कैपेसिटर की स्थापना, कमजोर विद्युत लाइनों में सुधार जैसे कार्यों को प्राथमिकता नहीं देने के कारण यह समस्या निर्मित हुई है। वहीं अब नई प्राथमिकता सूची बनाई जा रही है जिसके आधार पर आचार संहिता समाप्त होने के पश्चात नये सिरे से लंबित कार्यों को गति प्रदान की जाएगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि जहाँ कहीं भी गंभीर समस्या दिखाई पड़ रही है वहाँ आपात स्थिति से बचकर कार्य किया जाए और ग्रामीण अंचल के लोगों को राहत दिलाई जाए। किसी भी स्थिति में प्रदेश में किसी भी स्थान पर अप्रिय स्थिति नहीं बननी चाहिए और न ही कानून-व्यवस्था में व्यवधान होना चाहिए। आचार संहिता समाप्त होते ही योजनाबद्ध कार्यों को गति प्रदान की जाए ताकि ग्रामीण अंचलों में लो-वोल्टेज तथा बिजली की आँख-मिचौली जैसी समस्याओं का समाधान किया जा सके। नई सरकार के आने के बाद दो विधानसभा सत्र, नया बजट, लोकसभा चुनाव की आचार संहिता जैसे कारणों से अभी नई सरकार को बुनियादी तौर पर बड़े कार्य करने का अवसर नहीं मिल पाया है और तात्कालिक सुधार तथा आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए काम चलाना पड़ा है इसलिए बड़े कार्यों के लिए आचार संहिता समाप्त होने की प्रतीक्षा बेसब्री के साथ की जा रही है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354